

निरुपमा

नीलेश प्रकाशन
१११ मन्दिर द्विती 110031

निरुपमा

महेशचन्द्र सक्सेना

मूल्य	20 रुपये
प्रथम प्रकाशन	1988
कहानी संग्रह	निरुपमा
लेखक	महेशचन्द्र सखसना
प्रकाशक	नीलम प्रकाश
	ए 7/46 कृष्ण नगर दिल्ली 110051
मुद्रक	दामोदर प्रिन्टिंग
	मरीन हाइवे, दिल्ली 110032
NIRUPAMA Mahesh Chandra Saxena	
(Story Collection)	

परिचय

कहानी लिखना कठिन काम है और उससे भी कठिन प्रतीत होता है अपनी ही कहानियों के विषय में परिचय कराना ।

हमारे देश को आजाद हुए तीस वर्ष हो गए । हमारे देश और समाज ने काफी प्रगति की है, लेकिन हम मानसिक रूप से अभी तक स्वतन्त्र नहीं हो पाए । हमारी सोच के दायरे सकुचित हैं । आज भी हम लोग सोचते हैं कि वश चलाने के लिए पुनः का पैदा होना जरूरी है । भले ही वह कुपुन क्यों न हो ।

पुरुष समाज का कणधार है, यह तो ठीक है लेकिन सहघर्मिणी, सह-योगिनी के बिना वह अधूरा है । नारी और पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं । दोनों मिलकर एक नए परिवार की रचना करते हैं । दाम्पत्य सूत्र में बंध जान पर मुक्त वातावरण में विचरने वाले दो युगल सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक दायित्वों के प्रतीक बन जाते हैं ।

सहघर्मिणी अपने निश्चय पर दब हो जाए तो असम्भव को भी सम्भव बना सकती है वह चाहे तो अपने जीवन मंथी को प्रेरणा और साहस से उन्नति के शिखर पर पहुंचा देती है ।

आर्थिक विपन्नता और रुढ़िवादि सक्तीयता को दूर करना ही मेरी कहानियों का आधार है । इन कहानियों को मैं कहानियाँ नहीं म्थाय कहूँगा, ऐसा सत्य जिस आज भी समाज का अधिकांश वर्ग भोग रहा है ।

मेरी कहानियाँ के पात्रों ने बिना किसी लाग लपेट के सपनों को जीया है । इसी अन्तर पीड़ा ने मेरी कहानियों में अभिव्यक्ति पायी है ।

आभारी हूँ अपने परम मित्र डॉ० ओम प्रकाश सारस्वत का, जिन्होंने मुझे हादिक सहयोग देकर मेरे और नीलेश प्रकाशन के संचालकों के मध्य पुल का कार्य किया ।

शिमला (हिमाचल प्रदेश)

—महेशचन्द्र सक्सेना

क्रम

अधकार मे डूबा सूरज	9
तुलबहादुर	15
सूयविरण	21
नूरी	26
रेत की दीवार	30
सध्या	35
दायरे	41
झूलसते गुलाब	46
नायक	51
शान्ति	55
निरूपमा	60

अधकार मे डूबा सूरज

मेरे द्वार पर बिसी न दस्तक दी और मैं घर के कामों में उलझी जब द्वार पर गई तो देखा कि एक गोल मटोल साबला चेहरा सामने था। एक पल में कुछ क्षणों की शायद कोई नया मेहमान हो किन्तु जरा गौर से देखा तो मजी-मवरी मोटा-सा जूड़ा बाधे एक बगानिन लड़की कंधे पर बड़ा-सा पल्ल लटकाये कुछ आदेशात्मक स्वर में कह रही थी—मुझे कुछ रुपये दीजिये, 'बीबी जी।' आपका भला होगा मैं घाब स पीड़ित हूँ। मेरे साथ बड़े और परिवार भी हैं। मैं उसकी निर्भीकता देखकर ताड़ गई कि यह कोई पेशेवर मागने वाली लड़की है। 'जान न पहचान खाला जी सलाम' वाली कहावत—आखिर तुम कौन हो, कोई काम क्यों नहीं करती? मेरा नया तुला सवाल था।

यह बोली उस पैसे मागना ही तो मेरा काम है। दना है तो दो करना मैं चलती हूँ।

मैं उससे बेबाक तक पर हाबुद-सी थी। सोचा उसे डाटकर भगा दूँ, फिर असमंजस में पड़ गई, साचा शायद सब मैं जरूर न मद हो, यह सोचकर मैंने कुछ पैसे तो दे दिये, किन्तु मुड़कर सोफे पर बैठकर कल्पना में खो गई। पूरे देश का मानचित्र मेरे मस्तिष्क में साकार हो उठा। लगा जैसे सारा देश गरीबी की लपेट में हाथ फैनाये खड़ा हो। मुझे लगा जैसे सभी सभ्य बड़े जाने वाले बड़े महानगर कलकत्ता बम्बई, दिल्ली, लखनऊ हरिद्वार, मद्रास इत्यादि अपनी विभिन्न वेश भूषा एवं बोलियों में भीख माग रहे हों। एक प्रश्न बिहू मेरे सम्मुख आ खड़ा हुआ।

आखिर ऐसा क्यों है? कोई अल्लाह का सहारा लिये कासा (कटोरा)

फैलाव है ता बही कार्ड राम और कृष्ण के नाम पर झोली पसार है। बहो ढागी हैं तो बहो लाचार समय ब मारे अपाहिज नहू-सुहान चीपडा म लिपट अधनमन भिग्यारी हैं। मरा मन इम भगवत दश्य स कलान्त हा उठा। सामन दीवार पर लग कलण्टर पर कलकत्ता ब ग्राड होटल ब अकित दश्य पर निगाह जटक बर रह गई। एमा आभास हुआ कि इम आलीशान भवन की आड म कितनी निधनता ब दश्य चीत्कार बर रह हा जिह मुनन वाल कान एगो आराम म बहरे हा चुके हैं।

उसी समय मरी पडागन न आकर बहा 'यहन तुम्हारी यह चिट्ठी पोस्टमैन मरे यह डाल गया लगता ह। आवाजवाणी शिमला स आई है।' मैंन घबड़ लिफाफा खेत हुए उह घायवा दिया। गालकर दया तो एक कहानी के प्रसारण का मिश्रण था। कहानी रतनी जरदी कहा स लिखू मैं अब दूसरी उलझन म पड ग' बितु शन शन कलकत्ते ब बाबू बाजार का दश्य मर सामन एक चलचित्र ब समान उभरन लगा—जिस मैंन आज से लगभग 20 वष पूव देखा था किंतु तब वह मर लिय केवल एक दश्य मात्र था और आज आज मुझे भत्ती प्रकार स्मरण है कि एक रात्रि के दश्य ने कहानी को लीट दिया। वषों की दबी कचाट उभर आई। तब मैं कलकत्ते के बाबू बाजार स्थित एक भव्य भवन म अपन रिश्त की बहन के यहां ठहरी थी। सारे घर वाल नील म खरिटे ले रहे थ और बहा की सीलन भरी गर्मी म मेरी नीद जाग रही थी। लगभग रात्रि का एक बजा होगा कि बाजार के एक कोन से शोर मचा। मैं चौंकर बिस्तर पर उठकर बठ गई। नीचे सडक पर झाककर दया—पुलिस की बर्दी पहन कुछ सिपाही सडक के किनार फुटपाथ पर साय स्त्री, बच्चा ब आदमिया को कोडा से पीट-पीट कर घसीट रहे थे और ब पशु ब समान बबस गुलाम से खीख रह थ। मैंने तुरत अपनी बहन का जगाकर पूछा यह सब क्या हो रहा है।

बहन बोली अरी पगली सो जा। यह कलकत्ता है यहां यह मारघाड रोज होती है। पुलिस वाल फुटपाथ पर माये भिखारिया से पस बसूल करते ह और पगडी म देन पर उह मारत हैं।

मैं चुपकर होन का प्रयास करन लगी कि कुछ दर बाद फिर वही गाली गलौज ब शोर सुनाई देने लगा। किसी तरह 'पन को शार का आनी

बनाकर मैंने कुछ दिन वहा काटे। जिस दिन वापस लौटना था उस रात्रि का देखा गरीबी का नग्न चित्र आज जब बंगाली लडकी पसे माग रही थी आखा के सामने उभर आया। बड़े-बड़े होटलो और घरा की ऊँची खिडकियो से मछली की मालें और जूठे चावल जब मालिक लोग नीचे फेंकते और उसी समय रेंगते कीड़ो स गरीब, अधनग्न बच्चे कूडे से जूठन उठा-उठाकर खाना शुरू कर देते। उस जूठन के लिए भी वे परस्पर लड़ते थ।

मैंने मन सयत कर सामन कमरे की टबुल पर पडे समाचार पत्र पर नजर डाली कि कुछ विचार का मानसिक तनाव कम करता फिर इस प्रकार की खबर सचिप सामन आकर अटक गई। मोट-मोट अधरो म लिखा था—'बंगाल की लडकिया पजात्र में बेची जा रही है, मैं फिर अशान्त हो उठी कि इतन म मेरे पति के मित्र रवि ने कमरे मे प्रवेश करते हुए आवाज दी—“अरे भाभीजी क्या सोच रही हैं लगता है आज कोई कहानी का पाठ सोचा जा रहा है या किसी पार्टी का प्रोग्राम बन रहा है।”

मैंने कहा—नही, रवि भाई ऐसा तो कुछ नहीं है बस मू ही घर का काम निपटाकर बैठ गई थी।

नही भाभीजी, यह बात तो मैं मानन वाला नही, आपके चेहरे पर स्पष्ट किसी प्लान की छाप दिखाई पड रही है।

अच्छा तो यही समझ लो।

रवि भाई बोले समझ कम लू कुछ बताओ तो समझू।

मैंने कहा तुम्ह सियाय चाय काफी क और कुछ समझ म नही आयेगा, हा प्लान की बात मन मे अवश्य है।

तेजो है न सच। पार्टी या कहानी का प्लान न सही तो मकान का प्लान होगा।

शिमला म मकानो की बडी तगी है। मकान का प्लाट खरीदना हो तो एक सेट मेरे लिये भी एडवांस मे बुक कर लेना।

मैंने कहा मैं काफी बनावती हू तुम पहा काँफी पियो म फिर बताऊंगी कि मैं क्या सोच रही हू।

यह हूद न मनलव की बात। उम गम गम काफी के साथ आपके प्लान के बारे म विचार विग्न करग।

मैं उठकर कॉफी बना लाई। इतनी दर में रवि मनमदत हवाई विल बनाता रहा।

जब कॉफी का घूट पिया तो रवि भाई वाल—'भाभीजी अब और सत्र नहीं होता। पहलिया मत बुझाइए। बताओ न, क्या सोच रही थी आप।

रवि मैं सोच रही थी कि आज का आधुनिक युग कितना सुसंस्कृत एवं सम्पन्न हो चुका है। मानव इस पृथ्वी से दूर चांद तारा पर जा पहुंचा है, किंतु फिर भी अभी उसे पृथ्वी पर चसना नहीं आया।

रवि कब चुप बैठने वाला था—बोला मैं समझा नहीं, आपका तात्पर्य क्या है?

तात्पर्य स्पष्ट है—आज हमारे देश में ही नहीं बरन् सम्पूर्ण संसार में कितनी गरीबी और अंध विश्वास है जादू-आदमी का शत्रु है। अपनी रोटी के लिये वह क्या कुछ करने में नहीं हिचकिचाता—चोरी डाका हत्या, आत्महत्या, बलात्कार छल फरेब सभी कुछ ताज्यो का त्याग है। न जान यह खून की प्यास कब बुझेगी?

जान दो भाभी! आप तो सुकरात की तरह दार्शनिक बन बठी। जब आप ही बताइए कि इतने बड़े विशाल समुद्र की तरंगों में आप जसी नारी के विचार तिनके के समान ह। केवल एक बूद ओस की तरह टिमटिमाती आशा मात्र। ऐसे विचार लेकर तो आज आदमी पेट भी नहीं भर सकता। हम इन आदर्श विचारों से लिपटे कब तक जी सकेंगे।

मुझे रवि की बातें विजली के करण्ट जसी लगी। मन मस्तिष्क को एक झटका-सा लगा। मुझे यह सब अच्छा नहीं लगा और मैं बोल ही पड़ी—तुम जस लोग ही तो नग्न यथाथ की दुहाई देकर समाज के ऋणघार बन कर समाज को ढुवान पर तुले हुए हैं।

रवि ने फिर एक कहावत मेरे सामने निलज्जिता से दोहरा दी—'बाजीजी यो टुवन शहर क अदेशे म । आपके साधने से मनुष्य बदल नहीं जाएगा और न ही समाज में भ्रष्ट गरीबी दूर हो जाएगी। समाज और तमारा का यह पचटा जापका रंग का लहू भी पी जाएगा और आप भ्रष्टार बाटा हो जाणगोशेष रहगी जापका मन में एक चुभन एक टीस।

मुझे देखिए ! मेरी तो फिलॉस्फी है— 'Eat drinke bemaarey' खाआ पिओ और मस्त रहो ।" तभी तो मैं मोटा ताजा हू । न समाज की फिक्र, न ससार का गम । जिसने जैसा किया वैसा भोग रहा है । इसमें दुख की क्या बात है । राह में भिखारी हैं या रागी मुझे क्या लेना-देना इनसे ।

रवि के यह तुच्छ विचार बड़े शक्तिशाली थे । उसने अपने तक के लिये कमवाद की ओट ली थी, किन्तु मेरी भावनाएँ भी किसी ठोस आधार पर थीं केवल किताबी नहीं । अतः मैंने कहा—रवि तुम कितने सकीण मस्तिष्क वाले मनुष्य हो । अपने जलावा किसी की परवाह न करने वाला तो केवल पशु के समान है । क्रुद्ध और गिद्ध भी तो माम के साथड़े के लिये लड़कर केवल अपना पेट भरना जानते हैं । साप की तरह तुम भी अपनी ही नस्ल को खा जाना चाहते हो ।

रवि मेरे तक में तिलमिला उठा । क्रोधित होकर वह उठ खड़ा हुआ और बोला—भाभीजी एक प्याला काफी पिलाकर आज तो आपने मुझे जानवरों की कतार में खड़ा कर दिया आखिर आप ही बताइए इस ला-इलाज बीमारी का निदान क्या है ?

निदान तो आसान है मैं अपने तक से परास्त रवि को बिठाते हुए कहा, 'पहाड़ी में तुम एक वनस्पति देखी होगी—बिच्छू बूटी और पालक के समान बूटी । दोनों पाम पास ही उगी हाती है । काटदार बूटी की जलन का इलाज पालक जस पत्ते का शीतल रस है इसी तरह गरीबी का निदान भी जनसंख्या की महामारी का रोककर कमशीलता और पाद पदार्थों एवं उपयोग की वस्तुओं का उत्पादन बढ़ाकर हो सकता है । यदि समाज में व्याप्त इस जलन को मिटाना है तो अवश्य उन्हें शिक्षित करने का दायित्व हम सभी का होगा । केवल सरकार को एक माली के समान पूरे चाटिका का भार सौंप देना काफी नहीं है आखिर माली की भी तो एक सीमा है । मरी चात सुनकर रवि भाई सोच में डूब गए । इसी समय उनका बेटा अकृश पापा-पापा कहता आ पहुँचा जोरबोला, चलो कोई आपस मिलने आया है । रवि चला गया । किन्तु अपने मन पर उभरी भरे तक की किरणें कमरे से बाहर लेता गया । मुझे विश्वास है कि वह एक दिन अवश्य समाज का ऊँचा प्रदान करेगा ।

मैं तबसे लेकर आज तक सोचती हूँ आखिर सच क्या है ?

हमारे नेताओं ने तो हमें भाषण और वायदे ही दिए हैं। वे भी सन्ध हृदय से देश के लिए गरीबी, भूख, बेरोजगारी के विषय में सोचें, कुछ करें, तभी इस समस्या को हम दूर कर सकेंगे।

हम सब लाग एक समाज में रहते हैं। देश हमारा है। हम सभी को देश हित के लिए इस समस्या का हल ढूँढना होगा।

हम सब एक साथ मिलकर ही समाज के इन गरीब, निरस्त कह जाते धाते लोगों को कम-पय पर से जाकर उनका भविष्य उज्जवल बन सकते हैं।

तुलवहादुर

'तुलवहादुर' एक नेपाली नक्के का नाम है। नहीं नहीं, उनका नाम तो अतुलकुमार है। वह देखो उसके रहने के कमरे की पिडकियों के शीशे पर लिखा है— अतुल कुमार।' किंतु फिर वह तुलवहादुर कौन है? इस एक प्रश्नचिह्न ने माधवी के मन का चारों ओर स घेर लिया। अतुल न मित्र शरत ने माधवी का उसके हाथ में वन के चित्र दिखाये जो पिडकियों के शीशे पर अंकित थे। इनमें कुछ पहाड़ी प्राकृतिक दृश्य थे तथा कुछ बल्लू घूटे, और अमूल रंग विरगी आकृतियाँ। माधवी इन रंगीन चित्रों को देख-कर आश्चर्यचकित रह गई। उसने ऐसा ही अमूल चित्र कुछ वर्षों पूर्व अमेरिका में ख़रीदा था। आज वह अपने दश में ही इन्हें देख रही है। वह शरत से बोली, 'मग्न द्रव चित्रों का कलाकार कहा है?' मैं उससे मिलकर बला का सम्मनना चाहती हूँ। शरत मु कराता हुआ बोला आटी जी धीरे-धीरे रगिय, जादय दधर दखिय यह उसी की मिलाई बानी मशीन है। वह स्वयं अपने सूट व अय वस्त्र सिल जाता था। और वह दग्धो जलमारी में रखा विज्ञान की पुस्तकें तथा दीवार के महार तटकत मनीत के बाद्य जिन पर वह बड़ी तल्लीनता से रियाज किया करता था।

माधवी बोली, मगर वह है कहा?

मग्न बोला 'आटी जी, जब वह हम लोग से दूर बहुत दूर चला गया है अपने दानपाल में सब तो यह है आटी जी कि वह भरा एक सच्चा मित्र था। बहुत रहत शरत की आँखें मोली हा गईं। माधवी असमजस में पड़ा उस मान्दना दे रही थी और कह रही थी कि इसमें रान की क्या बात है। तुम्हें उसका पता तो मालूम ही होगा। उस पत्र लिखकर मुला से

माधवी को क्या मालूम कि शरत उसके ठौर ठिकान स अनभिज्ञ था। शरत ने एक पल शून्य की ओर निहारा और अपनी आंखों स अश्रु पोंछते हुए बोला, मैं केवल यही जानता हू आटी जी कि वह मेरे परिवार का एक घनिष्ठ सदस्य बन गया था। वह मेरा बहुत रुयाल रखता था। मा बाप के समान मेरी देख भाल करता था और एक मित्र के समान मेरा मनोरंजन करता था। इस बड़े घर में वह आज से तीन वर्ष पूर्व एक नेपाली छोकरे के रूप में आया था। नेपालीकट चूड़ीदार पाजामा और कमीज पर काली जकट पहन, सिर पर तिरछी नेपाली टोपी लगाय कमर में खुखरी लटकाये, जब मैंने उसे पहले पहल अपने पढ़ने वाले कमरे में उस देखा तो मैं उस पर झट्ला उठा था—जब ! तू कौन है छोकरे ? बिना पूछे यहां बस आ गया।' इस पर वह मुस्करा दिया। उसको मुस्कराते देखकर मेरा सारा त्राघ पिघल गया। मैं वनावटी स्वर में फिर कहा—बड़ा बदतमीज हैतू यू मुस्करा रहा है। यह सुनकर वह रोने लगा। मैं उसका यह विरोधी रूप देखकर असमंजस में पड़ गया। मैं सोच रहा था यह अजीब छोकरा है। अपनी कुर्सी स उठकर मैंने बड़े ध्यान से उसस पूछा—भाई इसमें रोन की क्या बात है।

वह बोला कुछ नहीं शाब। मगर हमारा गलती क्या है ? मैं आज तक किसी का कुछ बुरा नहीं किया शाब

मैंने कहा अरे ! बुद्धू, कौन कम्बख्त कहता है कि तूने बुरा किया ह। बात यह है कि मैं पढ़न में व्यस्त था। कल मेरी परीक्षा है। बता तुम इस कमरे में किसन भेजा ?

वह बोला—मा ने।

तुम्हारा नाम क्या है ?

तुलबहादुर शाब,

अच्छा तो किसलिये मा ने तुम्हें यहां भेजा है।

छाना घाने को आप का वाला है शाब।

अच्छा मैं आता हू, तू मा के पास चल।

मैं तुरन्त उठकर मा के कमर में चला गया। मा मुस्करा रही थी। वाली आखिर यह छोकरा तुम्हें उठा ही लाया। चलो यह नया नीरर तुम्हें

ठीक कर लेगा। मैं तो रोज रात में तेरा इन्तजार करत-करत सो जाती थी। तुझे रोज ठंडा खाना खाना पड़ता था। जिंदी स्वभाव के शरत को इस उलाहने पर हल्की सी ठेस लगी। वह जाश्चम स बोला—‘मा यह छोकरा है कौन?’

‘शरत यह छोकरा आज से इस घर का सब कुछ है। इस कभी नौकर मत समझना। राजा साहब ने इसे तुम्हारे पापा के कहने पर नयाल स बुलवाया है। बड़ा समझदार तथा ईमानदार लड़का है लगता है किसी अच्छे परिवार का है।’

इस प्रशंसा पर शरत चिढ़ गया। बोला, ‘अच्छा तो मैं बुरा हूँ, और यह धूँ-सा छोकरा अच्छा लड़का है।’

‘शरत तू चिढ़ क्यों गया। जो तरी तरह हो, क्या वही अच्छा होता है। तू अब बड़ा हो गया है अच्छे-बुरे का पहचान करना सीख।’

अच्छा जाने दो मा, बात का बतगड मत बताओ। खाना लगाओ, मुझे अभी पढ़ना है। उमी समय तुलबहादुर कमरे में आकर बोला—‘गाब खाना मेज पर लगा दिया है। खलिए गम पानी स हाथ मुह धो लीजिय।’

ओह! तू इतनी जल्दी खाना भी परोस आया। लगता है तू सच में बड़ा समझदार है। यह कहता हुआ शरत खाना खाने चला गया। आज उसने बहुत दिनों बाद गम, और स्वादपूर्ण खाना खाया था, क्योंकि उसकी माँ मया आश्रम की मनेजर थी और पिता एक फर्म के मालिक। दोनों अपने-अपने व्यवसाय में इतने व्यस्त रहते कि शरत अपने भीतर एक अकेले-पन का आभास करता। मोटी-मोटी नीरम पुस्तकें तथा खोई-खोई सूनी कल्पना ही उसके एकाकी जीवन के साथी थे। जिसने फलस्वरूप वह अनजान ही चिड़चिड़ा हो चला था।

शरत की एक ही अभिन्नाया थी कि वह सारा दिन रंग बिरंगे फूलों के साथ गुजारे। अपने खालीपन को दूर करने के लिए वह स्वयं माली बनना पसंद करता था। बचपन में मेरे घर के गूँने वातावरण स ऊँच पर पड़ोस के लॉन में तितनिया के पीछे दीवाना-सा भागा फिरता। दिवा-मे घोया वह सोचता रहता कि मैं बड़ा होकर इस लान के माली के

एक अच्छा माली बनूंगा। अपने पिता के समान फम का मालिक या मा के समान किसी आश्रम का मैनेजर नहीं बनूंगा। देखो माली दिन भर अपने घर के पास ही रहता है। कितना आनंद है। फूलों और तितलियों के बीच।

उमके अंतर मन में जमा बचपन का स्वप्न यथाथ से टकरा कर चूर चूर हो गया। बड़ा होकर जब उसने स्वयं माली बनने का प्रस्ताव अपने परिवार के सामने रखा तो उसे लगा कि जैसे उसकी कल्पित रंगीन कामल तितलियों के पंख किसी ने मोच डाले हों उसकी भावी आशाओं के लान में सहलहान रंग घिरने फूलों का किसी बड़े भारी भरकम आदर्शात्मक पैर न कुचल डाला हो, उमके पिता उमसे कह रहे थे शरत क्या तेरा सिर फिर गया है तू खानदान की इज्जत एक माली बनकर तबाह करेगा। यही बनाना था—तो—जा—किन्नाबों को आग लगा दे। पढ़ने-लिखने से क्या फायदा? नालायक कहो का' शरत शिकजे में जकड़े शिकार के समान घामोश खड़ा था। इज्जन मौलत तथा परिवार की रुढ़ियाँ न उमके चारों ओर मर्यादा की सलाखें खड़ी कर दीं। उसका मन कह रहा था कि वह इन सलाखों का साटव, कि तु पास में घड़ी मा कह रही थी—बंटा, 'जरा माच तो कि तेरा भला किसम है।'।

शरत उम की गृहस्थी पर खड़ा एक असहाय घामोश युवक था। जिसके मामने ममचीता ही शायद जीवन का दूसरा नाम था। उसने अपने पिता की इच्छानुसार इजीनियर बनना स्वीकार कर लिया किन्तु वह साब रहा था कि आखिर इजीनियर बनकर वह क्या करेगा। मारा जीवन उम दृष्ट परंपरी में जूझना पड़ेगा। अचानक उम या हो भाया कि जैसे उसका पढ़ने के कमरे में उसका मित्र नेपाली छोकरा तुलजहात्त अपने घर में दूर पड़ा रो रहा है। उमरी मुश्किलों में किन्ना भोलापन, किन्ना दुसारी प्यार झलक रहा था। यहाँ उमका अपना बार्ड घर नहीं कोई मा-बाप नहीं। फिर भी किन्ना मागूमियन में वह उचारा बमहारा, बेघर बचल पद के निरंतरान में यहाँ नीकाल करन अकेल हा चला आया। उमकी नबरा के सामने अपने कवित्र के प्रिय प्राइमर द्वारा निधिन पुस्तक का गोपक धूम गया— मा-माट अंगार में अकित था 'Bread Shelter

और तभी उसने सबरप किया वह भी कुछ रचनात्मक काय करेगा, उसे अपने भीतर एक अलौकिक शक्ति का आभास हुआ। उसने निश्चय किया कि वह स्वयं एक अच्छा वास्तुकार बनगा। वह ऐसे भवन निर्माण करवायेगा जिसमें मानवता का पुट हा, केवल ईंट-पत्थरों से निर्मित ऊँची काल-कोठरियां न हों। वह बेघर लोगों को ऐसा घर देगा जिसमें मानव संवेदनाएँ तथा आकांक्षाएँ साकार हों। ईंट-पत्थर भी बोलते प्रतीत हों कोई अकेला रहकर भी एकाकी अनुभव न करे। बस इस विचार से ही उसमें एक नवीन चेतना आ गई। प्रायः तुलबहादुर भी कहता था—खाना और घर दोनों ठीक होना चाहिए, तभी मनुष्य आदमी को आदमी समझता है और भगवान् की पूजा कर सकता है।

वह एक अबोध बालक की तरह दौड़कर अपनी माँ से लिपट गया। माँ चिन्तित थी कि उसे हुआ क्या है? इतने में तुलबहादुर न कमरे में प्रवेश करत हुए कहा—माँ जी खाना ठण्डा हो रहा है चलिए खा लीजिये। शरत, तुलबहादुर की इस काय कुशलता पर मुग्ध था। इतना फुर्तीला तथा समझदार छोकरा इससे पहले उसने घर में कभी नहीं देखा। न जाने कितनी नौकर जाये और चले गये। कोई कामचोर था, ता कोई खाने पीने की वस्तुएँ चुराता था किसी को डाँट फटकार बताकर निकाला गया, तो कोई स्वयं बिन बताये घर से भाग गया। शरत मन ही मन सोच रहा था कि यदि यह छोकरा समय की कसीटी पर खरा उतरा तो मैं इस अपना मित्र बना लूँगा। वह शरत को प्रायः एक वास्तुकार बनने की प्रेरणा देता था।

यही सोचत सोचत शरत आराम कुर्सी पर ऊँघने लगा। जब माँ खाना खाकर वापस कमरे में आई तो शरत को देखकर दंग रह गई। वह सदा खाना खाकर अपने कमरे में सीधा चला जाता था, कहन पर भी कभी माँ के कमरे में नहीं रुकता।

माँ ने दुलार से शरत के सिर पर हाथ रखते हुए कहा—बेटा जाओ, अपने कमरे में जाओ, तू क्या सोचते साँचे सो गया?

कुछ नहीं माँ! बस यही सोच रहा था कि मैं अब माली नहीं एक वास्तुकार यानी आरकीटकट बनूँगा। मुझे परिवार का ही नहीं वरन् देश का भी नाम उजागर करना है।

कुछ वर्षों बाद उमने पण्डीगढ़ में भवन निर्माण करना की जिज्ञा ग्रहण कर ली और अपने पक्ष में मजदूरनाशक विचारों का रूप देने लगा। जब माधवी विद्वान् ने लोटी तो एक स्वप्न में ममता उस शरत से मिली जा सफलता की बगार पर गड़ा था।

माधवी ने शरत की कहानी एवं तुलबहादुर के बारे में जानकर अपना प्रस्ताव शरत के सामने रख दिया—'यह स्वप्न में गरीबों के लिए एक ऐसा अस्पताल स्थापित करना चाहती थी जिसकी वास्तुशिल्प की रूपरेखा पीडित रागियों का एक मानवीय जान-द द सकने में समर्थ हो।'

शरत जैसा अनुभवी भावुक वास्तुकार उस इस बात के लिए शत प्रतिशत उपयुक्त जवाब, क्योंकि उसका कल्पनाशील मन का आधार था एक असाध्य सरल मानव तुलबहादुर।

सूर्य-किरण

रीता का व्यक्तित्व अब नीरस हो जाता था। उसके लम्बे सूत्र चहरे पर भूरे रंग का विंग लगा था। निस्तज नत्रा के नीचे बाल रंग के घट्ट उभर आये थे। उसकी शुष्क त्वचा की परतों के भीतर लगता था कि कहीं कोई अथाह दर्द छुपा हो।

आतिर मैंने सवुचाय हुए भाव में पूछ ही लिया—‘हलो रीता। आजकल तुम क्या कर रही हो—तुम्हारे पति का क्या हाल है। अब बच्चे तो बड़े हो गये होंगे? कितना अर्मा हो गया तुमसे मिले।’ मैं यह सारे प्रश्न एक साथ में ही पूछ बठा।

वह मर प्रश्नों की शरी से विचलित हुए बिना एक नीरस सी हसी हसकर बोली—‘मैं टीक हूँ सबिना। दफ्तर के किसी काम से शिमला आई थी। सोचा तो बहुत था कि तुमसे मिलने के लिए पत्र लिखू किन्तु दफ्तर की उलझनों में भूल गई। तुमसे मिलने को बड़ा जो करता था सो आ गई।’

अच्छा तो तुमने नौकरी कर ली। तुम तो नौकरी के खिलाफ थी। खैर छोड़ो इन बातों को—किन्तु यह तो बताओ कि कौन-सा विभाग सम्भाला है।

मैं पयटन विभाग में हूँ। एक लडका सेट जेवियस स्कूल जयपुर में पढ़ता है और मेरा दूसरा बड़ा बेटा एयरफोर्स में पायलट है। तुम सुनाओ तुम्हारा क्या हाल है। क्या तुम अब भी कहानियाँ लिखा करती हो या कहीं पत्रकारिता की नौकरी कर ली है जो मुझसे मेरा हाल साक्षात्कार के रूप में पूछ रहा हो।

मैं उसकी यह बात सुनकर हस पड़ी, किन्तु दूसरे क्षण ही अपने को सदन करत हुए मैंने कहा—'खूब पहचाना तुमने, मरी कहानियाँ की पाँच पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं किन्तु मेरा क्षेत्र सीमित है। बबल नारी जीवन पर ही मेरी लेखनी उठती है। यूँ पुस्तक पर लिखना है भी कठिन। मेरे पति भी एक कहानीकार हैं।

रीता तपाक से घाली—'बाहू खूब मिली जाड़ी। और मैंने ध्यानात्मक स्वर में कहा डाला यानी तुम्हारा मतलब है रीता—एक जगह एक कोड़ी।

रीता सकपकाकर बोली नहीं मेरा अर्थ यह कहाँ नही था।

मैंने फिर चौक पर छक्का मारा—मनसब चाह कुछ भी हो किन्तु निस्संदेह तुम्हें पुष्पो की अच्छी पहचान है। फिर पर्यटन विभाग में तुम्हारा पद रिमैप्लान का है। जाय दिन नया सागा से वास्ता पड़ता होगा।

नहीं सविता अब मैं स्वागत कक्ष की अपक्षा उनके खाने पीने का अधिक व्यय रखती हूँ यानी मैं कर्टरिंग इंचार्ज हूँ।

अच्छा! यह तो और भी अच्छा है। मन ध्याम की अपक्षा प्रशंसा का भाव दर्शाते हुए कहा। इसका उस पर एक मनावधानिक प्रभाव पड़ा। वह बड़ी आत्मीयता से बोली—अब तुमसे क्या छुपाऊँ सविता। मेरा कोई बच्चा नहीं है। वास्तव में मेरा पति न दूसरा विवाह कर लिया। अतः दूसरी पत्नी से दो बच्चे हैं। यह कहते कहते वह अपने अतीत में खो गई।

वह कानपुर के एक विद्यालय की छात्रा थी। छात्रों का उपहास करती थी। नारी का वह पुरुष से बड़ा मानती थी। उसका दृढ़ विश्वास था कि एक दिन वह अपने को समाज में एक उच्च अधिकारी के रूप में प्रतिष्ठित करेगी। किन्तु ऐसा विद्यार्थी का स्वीकार न था। एक बार उस की आकांक्षाएँ सघप कर रही थी और दूसरी ओर मृत्यु शय्या पर पड़े उस के पिता उसे विवाह-सूत्र में बधन को बाध्य कर रहे थे। उस रूढ़िवाणी नारी का परिधान ओढ़ना ही पड़ा। उसका अनचाहा विवाह हो गया।

जिस क्षण मैं वही दाना बात कर रही थी उसका पास बाने हाल में टी०

बी० ५२ क्रिकेट मैच देखा जा रहा था। सारा हॉल खिंची-खिंची स
भरा था। पड़ोसी व मित्रगण जा-जा रहे थे। एक अद्भुत उत्साह-मिश्रित
वातावरण था। बीच-बीच में चाय-कॉफी के दौरे चल रहे थे। सबकी
घरसू नौकर मेहमानदारी निभा रहा था।

इतने में भारतीय टीम के कप्तान ने रनों का एक शानदार शतक पूरा
किया। सब छोटे-बड़े प्रसन्नता में नाच उठे। सबकी जवान पर एक ही
नाम था—कपिल देव। 'कपिल देव जिन्नाबाद क नार हाल में गज रह
थे। इन नारों को सुनकर भारत की मातायें कितनी प्रसन्न हुई होगी। मैं
सोच रही थी कि पुन हो ता ऐसा जो दश का नाम राशन करे। इतने में
मेरी पड़ोसन राधिका बोल उठी—पुत्र चाह एक ही हो किन्तु ऐसा ता हो
जो अपने देश का नाम उजागर करे, मां बाप का नाम रोशन करे। तनी
तपाक स मैं कहा—तुन ही क्या पुत्रिया भी तो दश का नाम उजागर कर
सकती हैं। यह कहत हुए मैं विश्व की उन सभी महिलाओं का नाम गिनाता
आरम्भ कर दिय जिन्होंने अपन अपन क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित किये हैं।

राधिका चिढ़ गई। बोली—हां! है ता ठीक कि तु लड़किया को
जबसर कौन देता है। पुरुष लाग औरतो को तो अपना गुलाम समझत है।
जीवन जीना भी दूभर है।

मैंने कहा—गुलामी की बड़िया तोड़ना भी तो हम नारियों का ही
काम है। एक दिन तुम भी अपनी नाक रखने के लिए कह रही थी—कि
मेरी बहू दहेज नहीं लाई। जो चाहता है उसे घर से निकाल दू। बड़े बाप
की बटी होगी अपन घर के लिए। मेरी आशाओं पर तो पानी फेर दिया।
मैंने अपन राजेश की पड़ाई पर कितना पसा खच किया। पर मिला क्या ?
उधर देखो रजनीश की मां का घर, दहेज रखने के लिए तिल भर जगह नहीं
रही। टसाठस घर भर गया। कह रही थी कोई बड़ी काठी किराये पर
लूगी।

मैं यह सब सुनकर सोच रही थी कि सब में नारिया भी क्या हैं ? इस
राधिका के समान न जाने कितने परिवार होंगे जिन्हें कभी जीवन में
सन्ताप नहीं होता। जोर जो स्वयं अपन को कलविन करत हैं।

दूसरी महिला हैं श्रीमती खन्ना जो कहती हैं कि पुत्र पुत्रियों से श्रेष्ठ

हैं। इसी चाह में स्वयं सात पुत्रियों की माँ बन बठी। न लोक लाज का भय, न आर्थिक कठिनाइयाँ का आभास। सदा एक ही वाक्य जुवान पर रहता है कि मेरा बाराबार कौन चलायगा? उधर उसकी नौकरानी सावित्री का कहना है कि गाँव में तो बिना पुत्र के पड़ोसी जीना दूभर कर देते हैं। और सरकार दूर में समाशा देखती है। अकेला चना क्या भाड़ फाड़ेगा। जिसकी लाठी उसकी भैंस—बड़े परिवार का ही गाँव वाले साथ देते हैं।

किंतु इस रूढ़िवादी परम्परा को तोड़ेगा कौन? सरकार बनाने वाले भी तो हम सब हैं। यदि हम नारियाँ चाहें तो परिवारों को अनक बुराईयों से बचा सकती हैं। जान वाली भावी पीढ़ी की रूपरेखा का दायित्व बहुत कुछ हम नारियाँ पर भी है। सीमित व सुशिक्षित परिवार का अपने लाभ भी है।

इस पर श्रीमती खन्ना तिलमिला उठी और बोली—चार अक्षर क्या पढ़ लिये मदों की हिमायत करने लगी। यह फिलॉसफी की बातें किसी और को समझाना, आखिर मेरा भी कुछ तजुर्बा है।

मैंने शांत स्वर में उनसे कहा—पढ़ने का अर्थ केवल दफ्तर की नौकरी या बलबा में ताश के पत्ते ही खेलना नहीं है। अपने घर के काम करने में हम लज्जा का अनुभव या ग्लानि नहीं होनी चाहिए। आप अपनी पुत्रियों पर घर का सारा भार डालकर अधिकतर घर से बाहर ही रहती हैं। क्या यह उचित है? इस तक पर वे उठकर चल दीं। उन्हें लगा सब उन्हीं पर प्रहार कर रहे हो। मैंने चुटकी सेते हुए कहा—अरे! क्रिकेट जीतने की खुशी में एक बप चाय तो पीती जाइये।

अब कहा खन्ने वाली थी। बोली, चाय नहीं पीनी, पढ़ में जलन है घर घर जाकर डायजीन लूगी और अनायास जाते-जाते वह ख गई।

मैं सोच रही थी—मच वास्तव में कितना कड़वा होता है। उसे गले आरना सबक बस की बात नहीं। इतने में राकेश आ गया। बोला—आंटी जी क्या बहस चल रही है? चाय तो जाज पिलवानी ही पड़ेगी। क्योंकि भारत की टीम न मच जीत लिया है। मैंने मुस्कराकर श्रीमती खन्ना वाला चाय का प्याला राकेश की ओर बढ़ा दिया। वह चाय की

चुस्की लेता हुआ कह रहा था—बेटा हो तो कपिल देव जैसा। यदि उसे अपनी माँ का सहारा न मिलता तो वह इतना बड़ा खिलाडी न बन पाता। किन्तु आजकल माता पिता बालको की रुचि जाने बिना ही उन्हें डॉक्टर या इंजीनियर बनाने में ही अपना गौरव मानते हैं। लडके लडकी में भेद-भाव करते हैं वह अलबत्ता।

शाबास रावेश शाबास। तुमने मेरे मन की बात कह दी। इन बहनों का सम्माना कठिन है। मेरा भी कहना यही है। एक सूय साधो सितारो से उत्तम है। चाहे लडकी हो या लडका। गुण चमकता है यही लोग समाज और देश का इतिहास गढ़ते हैं।

श्रीमती खन्ना रावेश का तब सुनकर कुछ सोचने पर विवश हो गई। और अब उन्हें मेरी बात में भी सार नज़र आने लगा। उनका तिलमिलाया चेहरा किसी आन्तरिक बदलते भाव से चमक उठा। मुझे लग रहा था जैसे उनके व्यक्तित्व का कायाकल्प हो रहा हो। उनमें नये विचारों की ससज़ने की शक्ति आ गई हो।

मैंने तुरन्त उनसे पूछ लिया—आप ही बताए कि मेरा क्या कहना कहा तक ठीक है ?

श्रीमती खन्ना लज्जा का अनुभव करते हुए कुछ बोल न सकी, उन्होंने केवल सकारात्मक सिर हिला दिया और कमरे से बाहर चली गई।

नूरी

हरिद्वार जाने वाली गाड़ी कुम्भ के मेले के कारण यात्रियों से खचाखच भरी हुई थी। मैं दूसरे दर्जे के डिब्बे में अक्ला बैठा ऊष रहा था। सिर के ऊपर सामान रखन वाली सीट पर लदे यात्रियों के अंकुश पर लटक रह था। भीड़ में उठती पसीन की एक अजीब बदबू से मेरा सिर फटा जा रहा था। मैंने एक बार साचा कि गाड़ी से उतर जाऊँ—वैसे ही किसी की अजनबी आवाज कानों में पड़ी—

हा, भाई तो सुनिये मेरा नाम है नूर मोहम्मद। मगर मेरी बीबी मुझे प्यार से नूरी कहती है। यह मेरा चारखाने की कमीजनुमा कुरता और यह अलीगढ़ कट पाजामा उसी के हाथ का सिला है। मर गले में लटकता यह काला ताबीज मेरे उस्ताद की यादगार है। यूँ मैं कोई मौलवी या मदारी नहीं हूँ। पेशे के लिहाज से मैं एक चलता फिरता जनरल स्टोर हूँ। मसूरी अलमोड़ा और ननीताल में मैं मौसम के मुताबिक हर काम कर लेता हूँ।

मैं उस अजनबी नीजवान को बीच में टोकन हुए पूछ बैठा—क्या मतलब है मिया ? तुम हर काम कर लेते हो।

जी हाँ। वह बोला—अजी इसमें ताज्जुब की क्या बात है। मसूरी में फलों की दुकान है। ननीताल में पुराने अखबारों की रद्दी की आदत है। पुराना माल घरीक कर बचाविक का काम भी कर लेता हूँ। जब इन सब कामों का मौसम नहीं होता तो मैं मदारी का काम करता हूँ। यह वाक्य कहते ही उगने अगने खाने का सहज बत्तल लिया। बाला—जनाव हमारा पेशा है Magic—यानी जादू सिखाने का—बाला जादू बनवते वाला—बमाल

चे तौर पर बगाल से सीखा—फिर रूस, चीन, जापान और मिश्र म खाना-
न्दोश की तरह मौत और जिन्दगी से खेलकर मिश्र का काला जादू हमारे
हाथ लगा या अल्लाह ! शुक्र है तेरा या उस्ताद तूने चिराग अलाउद्दीन
को मेरा गुलाम बना दिया । हर मुल्क का बच्चा-बूढ़ा-जवान मुझे मानता
है ।

मुझे उस नौजवान की ऊटपटांग बातें सुनकर कुछ हसी आई मगर
वह बेलगाम बोलता ही रहा । उसकी आवाज धीरे धीरे बुलन्द होती गई
आवाज के गाले बाहर की ओर निकालता हुआ अपने दाहिने हाथ को हवा
में घुमाकर एक खास अंदाज में यह बोला—

भाजा काली बलकत्ते वाली,
मिश्र की रूह अमाली,
ऐ मेरे उस्ताद क्याली,
मेरा हुनर न जाय खाली,

ला—जल्दी ला—रूह अफजा—बुला शैतान का बच्चा कहा है ।
भेज दे एक ताह का डण्डा इस डिब्ब की पब्लिक बैठती नहीं—मैं अभी
मिस्मरेजम पड़ना हूँ—सबकी जुवान बट जाएगी—खून बहगा—खून और
वह बड़ी जोर से चिल्लाया—एक खौफनाक आवाज में—अलामीन !

किसी तान्त्रिक के समान उसकी आवाज सुनकर डिब्बे के यात्री सहम
कर जहा के तहा बैठने लगे । मैं भी भींचक्का सा देख रहा था उस नौज-
वान का एक अजीब करिश्मा । अब सब की नज़रें उस नौजवान पर लगी
थी । वह मरी ओर मुखातिब हाकर बोला—बाबू साब यह फकीर का
पहला जादू था । अब देखते जाइय दूसरा और तीसरा !

मुझे लग रहा था कि जैसे झाम का दूसरा सोन शुरू होन वाला हो ।
उस नौजवान ने अपने कंधे पर लटकत एक झोले से लोह के विभिन्न
प्रकार के छोटे बड़े ताले निकाले—एक के बाद दूसरा ताला मुमाफिरो को
दिखाना हुआ एक स्थान पर रुकना हुआ एक बड़े ताले की चाल
हुआ बोला—यह तानी यानी कूजी बड़ी किस्मत वाली है ।

ताले के धारों ओर घुमाकर ताला खोलोग तो मालामाल हो जाओगे—
 खजाना तुम्हारे घर आयेगा। आजमाना हो तो खरीदकर देखो। यात्रियों
 की ओर बढ़ता हुआ वह बोला—‘हा भई तो जिसको लेना हो बोल दना’
 असली अलीगढ़ का ताला है। जमन का लोहा हिंदुस्तान का कारीगर
 —अगर आप हिंदुस्तानी होकर हिंदुस्तान का माल नहीं खरीदे तो देश
 का भला कैसे होगा। इस ताले का दाम बहुत सस्ता है। समझ लो हीरा
 पड़ा मिल गया—बीस रुपये वाला सिर्फ दस रुपये में दस रुपये वाला पाच
 रुपये में और पाच रुपये वाला दो रुपये में भाई—यह मौका फिर नहीं
 आयेगा।

पूरा ढिंढा खामोश था। लोग उसका बड़े बड़े शब्दों को तौल रहे थे
 और अपनी जेबें टटोलने लग गये।

उस ताले बेचने वाले ने फिर कहना शुरू किया—यह आखिरी बोली
 है—मेरे भाई—बल्लाह सोचते क्या हो? इस तरह सोचोग तो काश्मीर
 कैसे फतह होगा—निकालो दाम—एक दो और यह तीन—हा भइ अगर
 बड़ा नोट हो तो मैं तोड़ दूंगा। अगर माल में शक हो तो अभी मौका है—
 देख लो—परख लो—माल खोटा हो तो वापस—चार दिन के बाद भी—
 मैं हमेशा इस गाड़ी पर चलता हूँ—हजारों ताले बच चुका हूँ।

मैं सोच रहा था कि वह कहने की एक साधारण ताला बेचने वाला है
 किन्तु उसके बोलने के लहजे में एक सम्मोहन है। इतने में मैंने देखा कि
 पास बैठे लोगों के हाथ अपनी जेबों पर जाने लगे हैं। सौदा आरम्भ हो
 गया। देखते ही-देखते उसके पास झोले में रखे तीस ताले हाथों हाथ बिक
 गये। बस दो ताले उसके हाथ में रह गये। मेरा भी मन हुआ कि शेष
 दो ताले खरीद लू कि इतने में एक यात्री ने हाथ बढ़ाकर उन्हें भी बड़े
 चाव से खरीद लिया। अब उसकी चलती फिरती दुकान बढ़ चुकी थी।
 अगले स्टेशन पर गाड़ी रुकी और वह ताले वाला बित्री के नोट सम्हालता
 हुआ नीचे उतर गया।

मैंने सिगरेट का एक कश खींचकर लोगो पर लालसा भरी नजर
 डाली तो देखा लोग ताला का ऐस दख रहे थे कि जैसे उन्हें मुफ्त में निया-
 मत मिल गई हो। ढिंढे में बड़े अशिक्षित ग्रामवासियों की घुरघुरी हथेलियों

परनरुबी पालिस के सिंगरो जैये टीन के ताले चमक रहे थे। उनमे से एक न आश्चर्य से कहा अरे ! धोड़ा हो गया यह तो टीन के नकली ताले हैं। शेष लोग भी अपने हाथ मलते रह गये। सस्तेपन का मोह निराशा में बदल गया। मेरी निगाहो मे आज भी सरुरम वस्तुएं बेचने वालो को देखकर उस बाक्थपट्ट नूरी का चेहरा उभर आता है।

रेत की दीवार

जब कभी मेरे कमरे की खिड़की से बरसात के उमड़त कजरारे मध, कमरे के भीतर घुसने लगते हैं तो मेरा मन सिहर उठता है और मेरे मानस पटल पर शनै शनै अतीत के कई घूमिल चित्र उभर आते हैं। यह चित्र किसी गौरवशाली चित्रकार के रंगीन चित्र न होकर गरीबी में डूबे असहाय लोगों के चित्र होते हैं। जिन्हें या तो हमारे समाज के क्रूर हाथों ने बनाया जाता है या फिर मनुष्य ने अपनी बुद्धिहीनता से रंगा होता है। इन मोटी मोटी काली पतों के पीछे, निस्तेज टिमटिमाती आँखें, जोर भीख मागते नहे नह बच्चों के सूखे हड्डियों वाल हाथ, शरीर पर लिपटे जर-जर चीयडे देखकर मेरा मन सिहर उठता है, आखिर यह सब क्या ? मजू बड़ी तल्लीनता से यह सब सोच रही थी—

शिमला हिमाचल की सुंदर राजधानी है। जिसकी सुंदरता को देखने के लिए हर साल असंख्य नर नारी यहां आते हैं लेकिन इन नह बच्चों को देखने वाला कोई भी नहीं। जिनका ना कोई घर है ना ठौर ठिकाना।

अचानक सामन मेज पर पड़े जखबार पर मेरी दृष्टि गई तो उसके मुख पष्ठ पर मोटे मोटे अक्षरों में लिखा था— 'अंतराष्ट्रीय बालवध समारोह' बड़ी धूमधाम से मनाया गया। क्या यह सच है ? एक तरफ इतना बड़ा समारोह दूसरी तरफ यह भीख मागते असंख्य बच्चे।

इसका दोषी हमारा समाज है या यह मासूम बच्चे। मजू यह सब सोच ही रही थी कि अचानक दरवाजे पर लगी घटी बज उठी। वह चौंक कर बाहर गई। द्वार खोला तो देखा उसकी पड़ोसन शालिनी बड़ी मुस्करा रही थी। वह कुछ बोले कि शालिनी स्वयं ही बोल पड़ी, अरे मजू तुम तो

लगता है किसी शोक सागर से निकलकर आई हो। सब शोक है न?—
अपन मन को सपत करत हुए मैंने कहा—‘शालिनी तुम्हारे बच्चे कहीं हैं?’
हैं?’

बिन बच्चों की बात करती हो, भजू! मुझे तो शम आती है, अरु
तुम्हीं बताओ कि आधे दर्जन बच्चों को लेकर मैं कहा जाऊँ? कभी-कभी
तो मन बड़ा खोज उठता है। इस महगाई में इतनी बड़ी पौज को पायना,
कितना कठिन है। मज्जू यह सब सुनकर अवाक रह गई, और बारी—
‘शालिनी तुम ऐसी बातें क्यों करती हो? आखिर हैं तो वह गय तुम्हारे
ही बच्चे।’

शालिनी दबमयी आवाज में बोली—‘हां हैं ता सब मर हो बच्चे, किन्तु
तुम्हें शायद यह नही मालूम कि दो सड़किया मेरी और चार मरकिया पत्न
वाली पत्नी की हैं। जिस तुम्हारे भाईसाहब न तनान दे गया है। यह भी
जानती हा, क्यों? क्योंकि उस बेचारी के बाई नटका पैदा नहीं हुआ।
मेरे पति की चार सड़किया इस उम्मीद में हो गई कि भायरा अगली गंगा
सड़का हा जाय किन्तु विधि का विधान हीन टाग मक्ता है। पति-पत्नी
में आए नि इसी बात को लेकर मगडा हुना म्ता था। वान बहुत बहुत
तलाक की नौबत पर आ गई। उनका पम्वाग मैं अभीगिन बरकर
शालिनी फूट फूटकर गन लगी। वह अपनी अया मुनाकर अपना ह्म
शात करना चाहती थी। आगे बीनी—मज्जू मैं एक मरीय मां बाव की उठी
हू फिर भी मेरे माता पिता ने मुझे बी०००० कहाया कि शायद मैं उनका
कुछ सहारा बन सकूँ।

इसी बीच मर पिता न रहे न दे म्कन के कारण मग गिना मग
स तय कर लिया। एक दिन अचानक, मरी मां ने मुझे सूचिन किन कि
बेटी तरा रिता तय कर लिया है। उनके की म्कन मरी तो म्कन ही
चुकी है लेकिन है पैम वाला। मग फट्टे पटना के भावान का निर
कुछ है तू मुख न रहगी बेटी। आर म्कन जागि। मैं म्कन
किस्मन पर छाडक चुन हो गई। दुख भी न मुम्ता भी न
गूड मा-बाप और उनकी ग्गिबी का म्कन, मर निर के
भी निकलना बहा मुक्ति था। म्कन बुद्धिवा न हूँ

हमेशा के लिए राजेश की हो गई। मजू मुझे लगता है मेरे माता पिता के लिए मेरा कुआरा शरीर एक नग्न शरीर के रूप में था, जिसका विवाह के वस्त्रों से ढकना, उनके लिए आवश्यक था। यह ऐसा वस्त्र था जिसे पहन कर मुझे कोई सुख नहीं मिला। मैं इसे सहन भी न कर सकी और उतार कर भी नहीं फेंक सकती। मैं कभी मुस्कराना भी चाहती हूँ तो इन छ' बच्चों का बोझ मुझे और पीछे ढकेल देता है। लोगो ब' तान सुन-सुन कर

बेचारे ने दो शादिया भी की, फिर भी छ' लबकिया ही पैदा हुई।' अब मैं अतीत की कल्पना में घबड़ा जाती हूँ। क्या करूँ क्या ना करूँ—कुछ समझ में नहीं आता, शालिनी फूट फूटकर बच्चों की तरह रोने लगी।

मजू की लग रहा था शालिनी एक नही मामूम सड़की के समान है जिसके खिलौने को किसी ने उसके सामने ही तोड़ दिया है। वस टूटे खिलौने के साथ वह नि सहाय सी खड़ी है। टूटे खिलौने से कोई खेल नहीं सकता परंतु टूटे खिलौने अपने खलने वाला का मज्जाक अवश्य उड़ा सकते हैं। मजू की आँखें शालिनी की दु खद क्या सुनकर छलछला आई। अपने को सपत्न कर वह बोली—शालिनी कितनी दयनीय अवस्था है। इस मध्य वय की नारियों की। जा आज भी ज्यों की त्यों हैं। आह भाग्य की विहम्बना कितनी प्रबल होती है, फिर मैं सदा कम की प्रधानता देती रही हूँ। मैं तुरन्त शालिनी से कहा तुम कोई नौकरी क्यों नहीं कर लेती?

शालिनी ने उत्तर में कहा—मध्यवर्गीय रुढ़िवादी परिवार की नारी के नाते हमारे परिवार में स्त्री का नौकरी करना, पुरुष का अपमान माना जाता है। भले ही नारी का भीत की कगार पर खड़े हवावर जावन क्या न बिताना पड़े।

मजू ने एक ठंडी सास ली। सचमुच हमारा ये भारतीय समाज कितना रुढ़िवादी है। समाज के झूठे गौरव का ढाँचा कितना जजर हो चुका है। शालिनी आधुनिक समाज का यह बरसाती सीलन प्रगतिवादी नीति का सारा बोझ हम जैसे बुनियाद के पत्थरों का, हमारी माँ की कल्पना को सहस-नेहस कर देगा। शालिनी और मजू में दुख की यह गायी अब एक गहन चर्चा का विषय बन हो गई थी। अचानक घटा बज्जी और वार्ता साप का गिससिता टूट गया। हलबवा कर मजू ने दरवाजा खोला तो

देखा उसके मैनेजर पति अरविन्द के भाष राजेश भी खड़ा था ? दोनों को अदर द्राइंग रूम में बैठाकर, मजूर किचन में नौकर को चाय बनाने के लिए कहने चली गई ।

शालिनी राजेश के साथ चलने को हुई कि तभी मजूर वापस आकर बोली—'अरे एक कप चाय तो पीती जाओ । हम लोग बातों में इतने उलझ गये कि एक कप चाय भी न पी सके ।'

शालिनी अतीत में खोई राजेश के साथ जाने को उतावली हो उठी । तभी राजेश बोला अब मजूर जी कह रही हैं तो बैठ भी जाओ, मगर यह तो बताओ कि ऐसी कौन-सी बातें थी जिसमें तुम्हें यह भी ध्यान न रहा कि बच्चे स्कूल से आने वाले हैं ।

मजूर बोली कोई विशेष बात नहीं थी मैं बच्चों को नौकर भेजकर यहाँ बुलाये ले रही हूँ ।

यह देखकर, मजूर के पति मैनेजर साहब को बड़ा आश्चर्य हुआ, कि आज मजूर को क्या हो गया है । इससे पूर्व मजूर केवल उच्च वर्ग की महिलाओं का ही आदर-सत्कार करती थी । मैनेजर साहब बोले—'कमाल है राजेश ! मजूर में बड़ा परिवर्तन आ गया । नहीं तो आपन राम को तो रोज ही नौकर के हाथ की चाय पीनी पड़ती है । आज तो मजूर न सबक लिए चाय स्वयं बनाई है ।'

मजूर को पहली बार एक भारतीय नारी के गौरव का अनुभव हो रहा था । बीच में ही राजेश बोल पड़ा—'हा तो मुझे भी पता चले कि आप लोगों में क्या बातें हो रही थी ?'

मजूर बोली बात यह है कि अब जमाना बदल रहा है, और बदलते समय को न पहचानना, कोई बुद्धिमानी नहीं है । यद्यपि अतीत को भुलाया नहीं जा सकता, किन्तु आने वाले समय को सुधारन में उस अनुभव से लाभ हो उठाया जा सकता है । तब तक नौकर शालिनी के स्कूल से लौटे-यक-हारे बच्चा को लेकर आ गया । बच्चे इससे पूर्व मैनेजर साहब के घर आन स डल थे । परन्तु आज इतना बड़ा परिवर्तन देखकर वह भी अचम्भे में थे । मजूर न बड़े ध्यान से बच्चों को घाना खिलाया और खेलने के लिए अपन पुत्र पुनीत के बहुत सारे खिलौने दिये ।

मजू ने कहा राजेश बात यह है कि अब हमे परिवार नियोजन पर कुछ सोचना ही पड़ेगा। अथवा हमारा समाज एक दिन राख में मिल जायेगा।

राजेश मजू के इस अथपूण वाक्य को सुनकर शर्मति हुए बोला— आप ठीक कहती हैं, अगर आपने कुछ वय पूव अपने घर चाय पर बुलाया होता तो मैं इतने बड़े सकट में बच जाता। राजेश को अपनी गलती स्वीकारते देखकर अरविन्द बाबू कहने लगे—कई बात नहीं राजेश, सुबह का भूला शाम को घर वापस आ जाये तो वह भूला हुआ नहीं कहलाता। किसी गलती से बचने के लिए प्रायश्चित्त सबसे बड़ी औपधि है।

इतना सुनकर राजेश वाला किन्तु इसके लिए क्या परिवार नियोजन ही पर्याप्त है प्रत्यक्ष पुरुष चाहता है कि उसका वंश आगे चले, आखिर इस मनोविनान का निदान क्या है ?

मजू इस तक क समक्ष झुकने वाली नहीं थी। यह सुनकर बड़े तपाक से बोली—हा जी कहने सुनने में तो यह ठीक लगता है किन्तु जीवन जीने में यथाय रूप में इसमें परे है। क्या उस सत्य को नकारा जा सकता है ? यदि पुरुष का प्रतिरूप लड़का खराब निकला तो तुम उसे परिवार का गौरव मानोगे या बवल भाग्य की विडम्बना कहकर टाल दोग ?

हमारे भारत का इतिहास इस सत्य का साक्षी है कि लक्ष्मीबाई, झांसी की रानी जयम रजिया अत्यान्ति आको वीरायनाओन पुरुषों से बड़कर इतिहास गढ़ा है। य नारिया जयचन्द मीरजापर अत्यादि अनक। सुविख्यात मदीं में वही अधिक् अपन परिवार वंश को सम्मान लिलान में सपस सिद्ध हुइ हैं। कतना ही नहीं, उनक नाम आज भी स्वयं अमरा में इतिहास के पन्नों पर अविन है।

राजेश मजू की तबसगत बातों के आम ननमस्तक हो गया। अनम उस म्यावार बगना ही पडा कि मजू सच ही क कह रही है। पुत्र या पुत्रा का भेदभाव केवन रेन की उस दीवार के समान है जो कभी भी गिर सकती है। यह परम्परागत गडिवाली सम्कार आज की सामाजिक व्यवस्था के लिए बड़ घातक हैं जो पुत्र की भालमा में स्वयं माना पिता का एक दूसरे में अलग कर रहे हैं। नारी का यदि उचित परिवेश तथा अवसर प्रदान किए जाएं तो वह पुरुषों के बजे में बघा मिलाकर समाज में एक अद्भुत गन्तुनन ला सकती है। हमें लिए हम अपने विचारों में परिवर्तन लाना आवश्यक है।

सध्या

कभी कभी जनों की परछाईया इतनी मजबूत हो उठती हैं कि उनसे बिना बान नहीं रहा जाता और जब कभी उनसे बोलन बैठती हूँ तो जी उगम हा जाता है और फिर ऐसा लगने लगता है कि किसी का मूर्धन्या समकता चेहरा हर रोज किसी निराश साप की प्रतीक्षा में निस्तब्ध होकर डूब जाता है या फिर हमारे निन्दन का इतजार करना हो ।

हा ! तो मैं कह रही थी किसी अतीत की यादगार की बान । ऐसी हा एक धूमिल साप का मेरी पहोन्नत सध्या मोम डूट रही थी । शिमला जम अन्तरराष्ट्रीय व्यापार प्राण पहाड़ी नगर में उसका घर अघ्नकार में डूबा था । बन्ती महगार्द के कारण उसके घर का बिजली का बिल इस माह अदा नहीं हो सका था । उनके घर की बिजली का कनेक्शन कट गया था । वह बच्चा पर बुरी तरह चम्का रही थी । रीना भीना नीना डब्ब बबनू और मुन्ना जम आये दजन बच्चा की मा बनने के पश्चात् अब सातवें आनुक तितु क नाम की स्त्रिया में चपेट हो चली थी । उनका बाद-ना चेहरा कवन अब हडिडगो का टाचा मात्र रह गया था । उसका पति रमण वपी पुरान गम मूट के टटे हुए बदन संगान के लिए मध्या पर ताव खा रहा था । उन समय एक टुकड़ा भोगवती भी घर में नहीं थी । आज उन अन स्तर व नये साह्य की स्वागत पार्टी में शामिल हान 'देविको रेस्ट्र' में जग था । अगर दर न पटुचा तो हो सकता था कि उनके पन नर नरह की वष श्रुति का िकार हाना पडे । सध्या चिल्ला रही थी—कम्बगती मानबना कहा है ? बच्चे महम में चुप थे । उनके मोम स केमल काय रह था । बड़ी लडकी रीता मा बाप के चिरपरि १५५५

प्रतीक्षा म थी अभी उसकी पडोसन सावित्री न दरवाजा खटखटाया। सध्या न अघेरे मे ही दरवाजा खोला तो देखा सामन सावित्री खडी थी— अरे वहन तुम ? कहो कैसे दस समय आना हुआ ?

—वहन दो पीस डबल राटी के हो तो दन की कृपा करो। अमानक ही काई मेहमान इस समय घर म आ गया है।

सध्या अपनी पडोसन की बात सुनकर सन्न रह गई। आज कई दिन बाद बच्चे की जिह पर उसने आधी डबल राटी बच्चे के जमा पैसा से खरीदी थी। वह घोर धर्म सबट मे पड गई। अपनी पडोसन को मना भी नहीं कर सकती थी और न ही अपने बच्चे का कोमल हृदय तोड सकती थी। एक क्षण विपाद की रखा उसके चेहरे पर उभर आई किन्तु दूसरे ही भण उसन सध्या की आडम्बरी मुस्कान बिखरत हुए कहा। देखती हू वहन शायद कुछ पीस किचन मे पडे हा और तुरस्त किचन मे डबल रोटी के पीस लेने चली गई। कुछ क्षण बाद वह लौटी तो उसके हाथ म डबल रोटी का पैकट था। पैकट सावित्री को एक घराहर के रूप मे दती हुई बोली यह लो वहन।

सावित्री डबल रोटी के पीस लेकर घर स बाहर चली गई।

सध्या सोच रही थी कि उसक बच्चे कहां डबल रोटी की फरमाइश न कर बैठें। सभी उसके पति रमेश न आवाज दी, अरे भई अगर पडोसन से गप्पें लड चुकी हो तो भरे कोट म बटन टाक दो।

सध्या हडबडा गई—उसने किसी तरह अघरे म अदाज स बटन टाक दिये। उस लग रहा था कि जैसे वह अपनी फूटी किस्मत पर पबल टाक रही हो। पति शीघ्र तैयार होकर पार्टी म चला गया। और सध्या अपने जीवन के आर्थिक अघेरा म खोई सोच रही थी—बाश उसके आघे दजन बच्चे न हात तो वह आज इस आर्थिक कठिनाई म न फसती। पता नहीं कब भारतीय मा की परम्परागत रुढ़िवादा परिभाषा बदलगी। मन का अन्तरद्वन्द्व वह रहा था कि यदि उसन और उसक पति न जरा भी बिबक और समय स काम लिया होता तो वह आज इस तनावपूर्ण मानसिक उत्तमन से मुक्त हाती। किन्तु उसका दूसरा तब कह रहा था कि जो सीर तरकश से निक्ल चुका है वह वापस नहीं आ सकता। स्वयं-बीते समय ओर बच्चा

का कान्ते ने कोई लाभ नहीं। आज भी वह इन निराशा में निकलकर बाग बानी पीने तथा अन्य ऐसे परिवारों को रास्ता दिखा सकती है। क्यों न वह आज ने यह सक्षम करे कि चल रहे सरकारी परिवार नियोजन के अन्विष्टान में समय निवास कर हाथ बटाए।

वह इन्हीं टपेड-मुन में खोई थी कि उसका छोटा लड़का नटखट मुन्ना लड़के समान आकर बोला—‘मा चुप क्यों हो? सध्या के ले में बाहें डालने हुए बटूटूटू हैं’ मा क्या आज भी डेही ने तुमने सड़ाई की है। तभी तो वह कहीं दूध पहनकर चले गये हैं।

मुन्ना की बात सुनकर सध्या का दिल पसीज गया। थोड़ी पर पहने की यन्त्राहत और मानसिक चिन्तन को दबाकर वह हसकर बोला—‘नहीं बेटा ऐसी बातें नहीं करते। मा को हसता देख बच्चों के सहने चेहरे खिल उठे। टन्व ने अपनी मा का अच्छा मूड देखकर अपने मित्र म चाची ने मागे गए छोटे में ट्राजिस्टर को अर्पित कर दिया। चल रही त्रिस्ट की कनेक्टी की मुनन के लिए किन्तु ट्राजिस्टर पर दिल्ली से समाचार जग रहा। बाट ने सैकड़ों परिवार बघर हो गये। लगातार मुखमरी व अकास के लोग अपने बच्चों को या तो बेच रहे हैं या उन्हें अनाथ छोड़कर रोड़ी की लगान में इहरों की ओर भाग रहे हैं।

यह समाचार सुनकर सध्या का जी निराश हो गया, उसे लग जैसे वह अपने बच्चा की बात सुन रही हो। उनके धीरेज का वाघ दूट गया। वह सहसा रा पड़ी। बच्चे फिर सहम गये और चुपचाप अपने बिस्तरों में दुबक गये। सध्या न जाने किस अज्ञान आशका से अपने बिस्तर पर मानसिक बोध में ऊपने लगी। उन लग रहा था कि अब भीघ्र ही उसके सामने अघरे म खरा विशालकाय आर्थिक समस्याओं का राक्षस उभरना लगेगा।

उसी समय उसके पति रमेश ने घर में प्रवेश किया। सध्या चौंकर बिस्तर पर बैठ गई और आँखें मलनी हुई बोली—‘अरे आप आ गए’ ला, अच्छा ही हुआ बही देर कर दी।

रमेश को आज सध्या के यह वाक्य बड़े अटपट लगे। वह बोला—‘क्या आज कोई नई बात है? मैं तो हर रोज दर से ही आता हूँ’ आज यह जवाब तलबी नैमी? क्या आज मेरा खात खाल है?

नही ऐसा तो कुछ नहीं है। सध्या न अपन को सयत करत हुए कहा। वास्तव म बात यह है कि आज मैंने एक् नया सकल्प किया है।

राजेश तपाव से बोला— मुझे पता है तुम्हारा सकल्प क्या होगा ?

सध्या न नित्य चिडचिडे मूड के स्थान पर राजेश को चितान क मूड में कहा—‘अच्छा तो आप ज्योतिष बिद्या भी सीख गय क्या ? जो बिना बताये ही मेरे मन का सकल्प जान गय। क्या नय साहब की पार्टी म स कोई दिव्य ज्योति प्राप्त कर आए है ?

रमेश कुछ गुस्से मे बोला— हर मद को तुम जैसी स्त्रियों के साथ रहकर ज्योतिष का ज्ञान हो हो जाता है। तुमन यही सकल्प किया होगा कि कल तुम अपन मायके चली जाओगी। मैं दफनर और परिवार की चक्की म अकेला पिसना रहूंगा। इसक जलावा दूसरा सकल्प तुम्हारे पास हो ही क्या सकता है, जीवन सधप स लडन की बजाय तुम स्त्रिया आमू बहाना जानती हो।

सध्या इन शब्दा को सुनने के लिय तैयार न थी। वह बोनी, नहीं यह गलत है। राजेश ने इस बार ममझोत के स्वर म कहा यदि यह गलत है तो फिर सच क्या है ? इतनी दर मे पहेलिया क्या बुया रही हो। साफ साफ कहो तुम्हारा निश्चय क्या है ? मुझे अब तुम्हारा कोई सय डरा नहीं सकता चाहे वह कितना ही बड्डवा क्या न हा।

स पा ने अपने पनि की नाजूक मन स्थिति समझकर अपने सकल्प की गोपनीयता की सीमा ताड दी और वाली— मैं। आज निश्चय किया है कि आज से मे आबका सध्धी सहचरी बनूगी।’

राजेश फिर सध्या पर जवल पडा— वाला अभी तक क्या तुम किसी और की सहचरी थी ?

नही। सध्या का उत्तर था मेरा मतलब है कि मैं अब इस आर्थिक भकट म लडने क लिय कोई ऐसा काम करूंगी जिससे सम्मान सहित समस्या का कोई समाधान निकल सक। कुछ धन उपाजन हो सके। मैं झूठी सभ्यता का इन आडम्बरी दीवारो को ताड दूंगी। एक् नारी घर मे रह कर भी धन उपाजन कर सकती है। मैं अब परिवार के काम काज स कुछ समय निकालकर बच्चा क सहायोग स सिलाई-बुनाई कर कायज क लिफाफ

बनाकर पड़ोस के छोटे बच्चा को पढ़ाकर आपका हाथ बटाने की आज्ञा चाहता हूँ। आखिर आपकी इस छोटी-सी नौकरी से कैसे काम चलेगा। मैं यह भी चाहती हूँ कि आज से अपनी अनबो अबोध बहनो तक यह संदेश भी पहुँचाया जाए, कि सच्चे अर्थों में नियोजित सीमित परिवार का अर्थ और लाभ क्या है।

रमेश सध्या के इन उच्च आदर्शों को सुनकर हनबुद-सा रह गया। उस लगा कि जस वह कुछ बहकी-बहकी बातें कर रही हो।

वह विचार सागर में डूबने-उतराने लगा। उसकी आँखों के समक्ष अपने उन मित्र-परिवारों के चित्र आ उपस्थित हुए जिनकी पत्नियाँ घर पर ही छोटे छोटे काम घाँघे करके परिवार को चलाने में पति का सहयोग देती हैं। उसके एक सहायगी की पत्नी निरक्षर महिलाओं के लिए अपने घर में आगनवाड़ी चलाती है। मरकर से उस इस काम के लिए सहायता मिलती है। एक मित्र की पत्नी गाँधी आश्रम के सहयोग से अपने घर पर ही एक महिला आश्रम चलाती है—जिसमें महिलाएँ सूत कातना, कपड़े सीना, चीनी मिट्टी के खिलौने बनाना जस कई कार्य करती हैं। सरकार ने महिलाओं के लिए अनेक नई योजनाएँ विकसित की हैं—परिवार नियोजन के लिए अशिक्षित महिलाओं पुरुषों को प्रोत्साहित करने वालों का पुरस्कार देना घर घर जाकर डाक जमा योजनाओं के लिए सदस्य बनाना अब तो जीवन बीमा बाने भी महिलाओं को अपना प्रतिनिधि बनाने में प्रमुखता मिले है। महिलाएँ पुरुष प्रतिनिधियों की अपेक्षा अधिक सदस्य चाहक बना सकती हैं। इन सब कामों से महिलाएँ अपने खाली समय के उपयोग के अतिरिक्त एक अच्छा खासा आर्थिक सहयोग प्राप्त करती हैं।

रमेश साच रहा था—क्या उसकी पत्नी भी उन महिलाओं की तरह कुशलता पूर्वक ऐसे काम कर सकेगी। इन कामों से उसे आर्थिक सहयोग भी मिलेगा और सध्या का समय भी उपयोगी बन जाएगा।

बच्चे भी अपनी भाँव को काम करते देखकर महनती और लगनशील बन जाएंगे। अपने मानस मथन के बाद वह सध्या की जोर स्नेहसिक्त दृष्टि से निहारने लगा।

वह अपनी पत्नी के दृढ़ स्वभाव से भलीभाँति परिचित था। एक पक्ष

की दृष्टि अपनी पत्नी पर डालत हुए वह बोला— क्या सच में तुम इन शुभ कामों के लिये समय निकाल पाओगी ?'

सध्या ने अपने दृढ़ स्वर में रमेश की शका को निमूल करते हुए कहा— समय तो हम जैसी नारियों के पास बहुत होता है केवल उसका सदुपयोग करने का साहस नहीं होता। यही कारण है कि आज तक मैं एक अपाहिज स्त्री ही बनी रही और स्वयं अपने चारों ओर निराशा का जाल बुनती रही। अब मैं आशा की एक किरण बनूंगी—आखिर इस देश में अनेकों स्त्रियाँ ऐसी भी तो हैं जो अपने सुखी परिवार के साथ साथ प्रांत व देश का शासन सम्भालने में सफल सिद्ध हुई हैं। डॉक्टर-नर्स-अध्यापिकाएँ-राजनेता और शिशु शालायें चलाने वाली अनेक महिलाएँ इस सत्य की सजीव मूर्तियाँ हैं।

दायरे

अनुपम उस दिन अपने गांव ठाकुरपुर में एक छोटे से कच्चे तालाब के किनारे बड़ा मनका का बड़ी बेचबूझ से जलार कर रहा था। मनका उसका गांव की कटानि की छेला की अवोष दालिका का नाम था। मनका की मा गांव के कच्चे तालाब में सिंघाड़े की बेत डालकर अपने छोटे से परिवार का गुजारा करती थी। मनका अपनी मा की एक मात्र सन्तान थी। मनका का पिता धार गरीबी से नयन करते हुए तपदिक का रिकार हो चुका था। मनका को हरे रंग की चूड़िया पहनने का बड़ा चाव था। वह अनुपम के घर दर्शन माफ करने का काम करती थी। अनुपम जब गया अपना पटाई के लिये गया था तो उसके परिवार के सदस्यों ने उत्तेजना कीजें लान के कहा। अवाध मन्का एक कोन में खड़ी सोच रही थी कि वह भी कुछ फर्माता छोटा कुजूर अनुपम से करे। लेकिन उसका सहस्र न हुआ। अनुपम की पैनी नजर उस पर पड़ी। उनके मनोभाव को नाउने हुए उसने तपाक में मनका से पूछ लिया—अरे! मनका तू भी कुछ मया से मैं गहर जा रहा हूँ।

छोट कुजूर में अनुपम मन की बात छिपात हुए उत्तने बड़े सकोषवश सजाकर कहा—कुजूर जी मेरे लिये बन हरी चूड़िया से आना। बार रहेगी मरा बात।

अनुपम बात—हा-हा मैं तेरे लिए जहर हरी चूड़िया लाऊंगा। चाहे सब का चाहे भूत जाऊ और खिन्नित कर हम पडा। मन्का अपराधी के समान सजावर बाहर चली गई थी।

अनुपम जब पीवाली के अवकाश में गांव सीटा तो सिंघाड़े बाड़े

के किनारे जाकर बैठ गया। वह सोच रहा था कि मनका अपनी मा के साथ जब तालाब पर आयगी तो मैं उस फरमाइश की गई हरी चूड़िया दूंगा, उन्हें पाकर बेचारी कितनी खुश होगी। काफी समय बीत गया मनका तालाब पर नहीं आई। वह उदास हो उठा। जब उसका मन ऊबने लगा तो उसने नजदीक पड़ा एक मिट्टी का डेला उठाकर तालाब के शान्त जल में फेंक दिया। शीशे से स्वच्छ जल में चक्करदार गाल घेरे बनन लग। एक के बाद एक छोटा घेरा बड़ा आकार धारण करता गया। अनुपम उन बतत बिगड़ते गोल दायरा को एकटक देख रहा था।

तालाब के जल पर तिरता दद शन शन उसके मन पर अंकित एक विशाल आकार धारण करता गया। वह खोया खोया सा साच रहा था विश्व के विध्वंसकारी इतिहास के भूले विसर पन एक एक कर खुलने लग। विशाल राष्ट्रो के बीच सम्भावित महायुद्ध, नरसंहार, रक्तपात, मानसिक तनाव—आखिर यह सब क्यों? उसके अंतर में छुपी यथा कह रही थी कि यह सब केवल ऊच-नीच के बगार पर खड़ी मानवता के लिये बलक है। नहीं राजनीति घेरे हैं तो कहीं सांस्कृतिक दीवारें। सच तो यह है आज मनुष्य ने अपना वास्तविक रूप ही खो दिया है। आज कहीं विमान की चुनौतिया हैं तो कहीं आध्यात्मवाद के बोधे आडम्बर न उभे लपट रहा है।

अनुपम के मन पर दद की परतें जमती गई किन्तु मनका अभी तक नहीं आई थी उसका मन आशंकित हो उठा।

उसी समय मनका का चचेरा भाई रामदीन चरबाहा उधर से निकला। तालाब के किनारे ठाकुर के लडके अनुपम को देखकर बोला—भैया यहां अकल कैसे बैठे हो?

अनुपम ने उससे पूछ लिया—अर रामदीन तरी बहन मनका कहा है? आज तालाब पर सिंघाड़े की बेल से सिंघाड़े तोड़न नहीं आई। मैं उसके लिए शहर से हरी चूड़िया लाया हू।

रामदीन बोला भैया वह तो गमीदार के घर झादी के जूठे बतन घों रही होगी। बारात आने वाली है और तुम यहां बैठे हो।

अनुपम दुखी हो उठा। और सोचा लगा कि मनका विसा ठाकुर के घर चंद रोटी के टुकड़ा के लिए विवाह उत्सव पर दिया गया भोजन बड़े-

चडे जूठे कालिख से पुत बर्तन अपने कोमल नहें-नहे हाथो से साफ कर रही होगी जब कि उस घर मे अथ वच्चे खिलखिलाकर हस रहे हागे । उस बालिका का जीवन विशाल पत्थरो के नीचे दबी कोमल गीली उम दूब के समान होगा जिसे कभी भी स्वस्थ्य वायु तथा सूर्य की धूप नही मिलती ।

अनुपम के मुख मडल पर बिद्रोह की लालिमा दौड गई । बिद्रोही मन कह रहा था—काश वह अपने सकम्प रूपी धन से इन बोविल चट्टानो को तोड सकता । चमकते पीतल के बडे-बडे जूठे बर्तनो पर लगी कालिख के समान सम्य समज के मुख पर ऊच-नीच की कालिख पुती है । धनवान निधन बालका स किस प्रकार अमानवीय काय कराते हैं । इस अन्तराष्ट्रीय मनाय जान वाले बाल बच म भी न जाने कितने निरोह अबोध बालक शहर म सुसम्भ्य सुमञ्जित होटला मे अपना तथा अपन परिवार का पट पालने के लिय रात निन काम करत हैं । क्या कभी वे बालक इस दासता से मुक्त हो पायेंगे ? शहर की जगमगाती रोशनी मे किनने निराश अंधेरे हैं । कितनी कहानिया उसके भानस-पटल पर उभर आईं । अपन बचपन मे उसने नाना प्रकार के अत्याचार स्वय अपन घर तथा गाव मे देखे थे । जब मैट्रिक पासकर उच्च शिक्षा के लिए वह शहर गया ता उमन शहर की सगको पर नग बदन भूखे श्रमिक तथा भिखारी बच्चे देख । उसका मन स्याकुन हो उठा था उह देखकर । समाज मे कितना अमनुलन है । एक और दिल दहला देन वाले मामिक दृश्य और दूसरी ओर धनवानो के शरीर पर आलीशान वस्त्रो के माथ छिडक गय कीमती सुगन्धित द्रव्य की घुगवू । आलीशान होटलो म भोज और प्याला म छलबनी मदिरा पकवानो की सुगन्ध और होटल के बाहर जूठन के ढेर म पट की भूख मिटाने भिखारी बालक रेलगाडी मे यात्रा करत जबसर उसन बडे स्टेशन पर भाजन की पालियो मे बची जूठन पर झपटते कुत्तो तथा बच्चो का देखा था ।

आज भी नालाब के किनारे बंठे हुए उस सामने तालाब की लग्गा पर निरत समाज के विभिन्न रूप साकार दिखाई पड रहे थ । जब व आकार कुछ रहना चाहत थे तो हुवा का झोका उन सहरो क घेरो का अतिशय ही मिठा दता था । कम तथा फान की जालि उमन पुस्तका न

किंतु आज उस श्रान्ति के वही मासल लोथड़े रक्त स सन पियाई पड़ रहे थे। सध्या हो चली थी। दूर खजूर के वक्षा न पीछे सूय का लाल गोला अस्त होन लगा। उसकी लाल लम्बाई तालाब के जल पर अपनी छायाए बिखेरन लगी थी। वह न जाने क्या क्या सोचता रहा। तालाब के जल पर हवा के थपेड़ा से अनगिनत दागरे छोटे स बड़े और बड़े स छोटे होत हात सशक्त किनारो के गम मे समात रहे। उह उन साहिला ने सहारा न दिया। ऐस ही न जान कितन दागरे वनत और बिगड़त रहगे।

मनका अभी तक नही आयी थी। अनुपम अब उसके बारे मे सोचने लगा। मनका का बाप उसके बचपन मे ही मर गया था। मा। सागा के घरा मे दिन भर बतन साफ करके पट भरन लायक बच्चा खुचा भाजन पाती है। अपने साथ वह छाटी अवाध बालिका मनका को भी काम मे लगाए रखती है। बड़े होकर भी मनका यह सब करेगी। इन गरीब बच्चा का जीवन भी क्या है गदगी मे खेलो, पलो और जूठन खा-खा कर अपनी जवानी को धनवानो के रहम पर छोड दो। गरीब की ब्या सुदर हा तो य धनवान उसे अपनी अकशायिनी बनाना चाहत ह। और उनसे कहा कि इह अपन घर की दुह्म बनासो, तो उनका मान सम्मान उनका समाज उनके आडे आ जाता है। ऊच नीच की दुहाइ देन लगत है लेकिन उह नष्ट करत समय य लाग नही साचत कि व नीच है।

मनका भी तो सुदर है उसका भरा भदा आकषक बहरा, सुतवा नाक बडी बडी जाखें अनुपम को उसके भविष्य के बारे मे सोचा पर विवश कर रही थी। मनका का भविष्य क्या होगा? क्या यह भी इन क्रूर धनवानो के हादस का शिकार बन जाएगी? क्या उसका सारा जीवन, उसकी जवानी इनकी जूठन साफ करत ही बीत जाएगी? समाज रुपी समुद्र की इन लहरों के थपेड़ो से उस कौन बचागगा? उसके अंतरमन मे सधप चल रहा था। क्या होगा मनका का? उस स्मरण हो आया जब वह शहर जा रहा था ता उसन किन्नी मनुष्यरूपवक कहा था छोटे कुअर शहर स मरे लिए हर काच की चूटिया न जाना कितना उल्लास, कितना प्यार छनक रहा था उसकी आंखा मे।

अधेरा घिग्ग लगा था। अनुपम किसी निश्चय पर नही पहुच पाया

था । बार-बार उसके मानस-पटल पर एक ही प्रश्न घोट कर रहा था—
मनका का भविष्य क्या होगा ? चिन्तन मनन करते हुए उसके हृदय से
एक आवाज आई—अनुपम तुम ही तो उसका भविष्य हो । तुम जैसे नौज-
वान मनका जैसी कलियों को पुष्पित होने का अवसर नहीं देंगे तो और कौन
देगा । कल के समाज के कणधार तुम्हीं युवक हो । राम ने भी तो शबरी
के बूढ़े वर खाये थे, उसका उद्धार किया था । शबरी भी तो छोटी जाति की
थी—भीलनी । अनुपम तुम राम बनो ! ममाज के सामने आदश उपस्थित
करो । एक से ही अनेक बनत हैं । पुरुष पुरुषार्थी होता है । साहस से आगे
बढ़ो ! साहसी पुरुषों का भविष्य उज्ज्वल होता है ।

कदमा की पदचाप से उसकी तन्ना टूट गई । उसने मुड़कर देखा—
मनका आ गई थी । उसने लजाकर गदन घुमा ली । उसके मुख पर वैशौच्य
आभा लालायमान हो उठी ।

अनुपम एक निश्चय के साथ मनका को माथ लिए तालाब से घर
लौट रहा था । वह मनका की बालिकाओं के भविष्य को सवारेगा । उन्हें
एक नयी दिशा देगा । ऊँच-नीच, गरीब-अमीर के भेदभाव को मिटायेगा ।

झुलसते गुलाब

रणधीर अपनी फ्रियट गाडी में बैठा साब रहा था सुनील के घर Birth day Party में जाने को वह लेट हा रहा है और उसकी पत्नी माधवी अभी तक श्रृंगार में ही लगी हुई है। लखपति होने का अब किसी का यहां मेहमानी में देर में पहुंचना नहीं है। उसने कार में बठकर हान बजाया। मगर बंकार, बीस मिनट और बीत गए। वह झट्लाया सा गाडी से नीचे उतरकर द्राघित मुद्रा में कमरे के अंदर पहुंच गया। माधवी अभी साडी बदल रही थी। वह उस पर बरस पड़ा। माधवी अगर तुम समय पर तयार नहीं हो सकती तो मुझे साफ साफ मना कर दिया करो। मैं अकेला ही चला जाया करूंगा। जाज भी तुमने पार्टी में चलने में इतनी देर कर दी।

माधवी ने आंख देखा न ताब। उसने इट का जवाब पत्थर से दिया तुम्हारी गाडी का हान सुनू या तुम्हारे आधे दर्जन बच्चा का मधुर संगीत। आखिर मैं भी इंसान हू, कोई मशीन नहीं। मैं तो तैयार हो गई थी पर डब्लू ने पेशाब कर दिया, अब साडी बदलना भी क्या गुनाह है।

नहीं माधवी कसूर तो मरा है जो तुम जसी स्त्री में विवाह कर लिया। अच्छा! अगर ये तुम्हारा गुनाह है कसूर है तो इसका प्रायश्चित्त क्या नहीं कर लेते। कर लो किसी वाइस स्त्री से शादी और निकाल दो मुझे अपने घर से। न रहेगा बास, न बजेगी बासुरी।

बस! यही तो है तुम्हारा मूखता भरा उत्तर। घर क्या है नक बन गया है। नक से भी बुरा लगता है मुझे आजकल। व्यापार से ही पसंद नहीं मिलती। अगर उससे फुसत मिले और मैं तुम्हारे साथ एनजॉय करूं तो मैं सोचू या नहीं जाना हो तो तुम पर पहाड़ टूट पड़ता है। मरो खुशी

से तुम्हें जलन होती है ।

जलन तो तुम्हें होती है मेरे बच्चों से और मुझसे । गुस्से से माधवी का चेहरा लाल हो उठा था । इसी समय उसकी पड़ोसिन, शीतला ने खिन्ना किया । अरे क्या हुआ गया माधवी ? क्या कहीं जले गई हो ? क्या आज तुम्हारा नौकर नहीं आया ? लाओ मैं जले पर बर्नोल लगा दूँ । मुझे बताओ कहाँ कहाँ जलन है ?

माधवी धून के आसू पीकर सतुलित स्वर में बोली—कुछ नहीं बहन ऐसे ही कपड़े प्रेस करत समय गम प्रेस जरा छू गया था । कोई खास नहीं जली, ठीक हूँ । कहो तुम्हारे क्या हाल हैं ?

मैं ठीक हूँ शीतला बोली । बस थोड़ी देर में वे भी दफ्तर से आत होंगे । मैं यह कहन आई थी कि आज रात मैं मेरे यहाँ संगीत समारोह है । तुम लोग अवश्य आना । भाई साहब तो व्यस्त होंगे पर तुम जरूर आना ।

शीतला की बात का माधवी जब तक उत्तर देनी कि शीतला चली गई ।

रणधीर अपने बारे में व्यस्ता का तक सुनकर और ज्यादा चिढ़ गया । उसकी दृष्टि में सारी स्त्रियाँ एक जैसी लगती थीं किन्तु फिर भी ईश्या से उनका हृदय जल उठा । उन छान हो आया किन्तु सुखी परिवार है पड़ोस में रहने वाले सुनील और शीतला का । दो बच्चे—एक लड़का इजीरियन कॉलेज में पढ़ रहा है और दूसरी छोटी लड़की मडिकल कॉलेज में प्रवेश की तैयारी कर रही है । अघेड़ हो जाने पर भी सुनील और शीतला की जोड़ी ऐस लगती है जैसे वह नव विवाहित दम्पति हो प्रत्येक शनिवार को घर में कार्दिन-कोई उत्सव मनाते हैं । दस पाँच मित्र एकत्र होते हैं मिलते हैं हसत गाते हैं । कभी कीतन, कभी संगीत समाराह कभी पिकनिक कभी जम न्नि पार्टी और कभी कुछ और उत्सव । यह सब कैसे कर लेत हैं ये लोग । सुनील बाबू की तनखाह तो कोई खास नहीं । उसका मन अनजाने में ही उस सुखी परिवार के रहस्य में उलझ गया । उसका शरीर शिथिल हो गया । वह कमरे में रखे सोफे पर धम्म से अचेत-सा बठ गया ।

ठीक यही स्थिति माधवी के मन में थी । उसके मन में हलचल हो रही थी । वह सोच रही थी । मेरा स्तर पड़ोसियों से कहीं अधिक

है। धन, दोलत मान, सम्मान नौकर चाकर आधुनिक सुख-सुविधा के सभी साधन मेरे पास हैं फिर भी हमारा यहां पारिवारिक शान्ति नहीं है। आखिर क्या कारण है? उस अपन आप में नफरत हान लगी और पड़ोसिया से ईर्ष्या। तभी टेलीफोन की घण्टी बज उठी।

रणधीर ने फोन नहीं उठाया और न ही माधवी न। घण्टी लगातार बज रही थी। माधवी ने मजबूर होकर टेलीफोन का रिसीवर उठा लिया। फोन पर रणधीर के मित्र की खीची बोल रही थी। माधवी बहन क्या बात है, आप लोग ठीक तो हैं? क्या बात है? जन्म दिन पार्टी पर सभी लोग आ गए, बस आप लोग का इन्तज़ार है। आप लोगों के इन्तज़ार में बक काटन की रस्म राक रखी है। आप लोग आ रहे हैं न?

माधवी ने दबी आवाज़ में उत्तर दिया—हम लोग शायद समय पर न पहुंच पाए। इसलिए आप अब और इन्तज़ार न करें। कहकर उसने टेलीफोन का रिसीवर रख दिया। कमरे में कुछ देर तक निस्तब्धता छाई रही। बच्चे एक एक कर उछल-बूद कर रहे थे शोर मचा रहे थे—मम्मी जन्म दिन पार्टी में नहीं चलना।

रणधीर बच्चा के शोर से परेशान होकर चिल्ला उठा—धुप रहा, भाग जाओ यहाँ से, कोई नहीं जाएगा जन्म दिन पार्टी पर।

गुलाब की पखुडिया से कोमल बच्चों का मुह सूख गया। उनकी कामल भावनाएँ पतझड़ के समान बिखर गई। सहमे सहमे बच्चे कमरे से बाहर निकल गए।

माधवी की ममता चकनाचूर हो गई। वह आधा दर्जन बच्चों को सम्भाले या अपने विद्रोही मन को। काश वह मा न बनती। बाज़ ही रहती। मा का हृदय लेकर वह किस मुह से पार्टी में जाए। किसी को क्या मालूम कि उसका मन कितना आ दोलित है। उसके पति दिनभर व्यापार में व्यस्त रहते हैं। रात को देर से लौटते हैं। बच्चे अपने पापा का मह देखन का भी तरस जाते हैं। उसके परिवार में कितनी दीवारें खड़ी हो गई हैं काश वह इन दीवारों को तोड़ सकती। उसके जीवन में कितना अधेरा है। क्या वह केवल बच्चों को जन्म देने के लिये ही बनी थी वह अपन बचपन की यादा में छो गई कितना सुख था कितनी निश्चितता थी। जब उसने यौवन

की दहलीज पर पैर रखा तो अपने को खिलते गुलाब की भांति महसूस किया। उसके रसीले यौवन के भक्कर दबे चारों ओर अनभिन्न ललचाये भवरे महराते थे। रणधीर भी उनमें से एक था। विवाह से पूर्व उसने कितने सब्ज-बाग दिखलाये थे, तब उसने अपने प्रेम को धन की चादर से ढक लिया था और आज वही चादर एक पत्थर-सा बोझ बन गई है। उस असहनीय बोझ ने उसकी आशाओं को कुचल डाला है। एक के बाद एक वह आधे दर्जन बच्चों की मा बन गई। उसे लगा जैसे उसका व्यक्तित्व कई टुकड़ों में बट गया हो। आज वह जो कुछ है वह केवल शरीर का जजर डाला मात्र है, जिसे जब चाहे रणधीर तोड़कर फेंक सकता है। वह आधुनिक जीवन के उतार-चढ़ावों में गोते खान लगी।

उसी समय उसकी पड़ोसिन ने आवाज दी—‘बहन संगीत शुरू हो गया है।’ रणधीर लड़खड़ाते कदमों से उठकर बाहर चला गया। बाहर शीतला का पति खटा इन्तज़ार कर रहा था। रणधीर को देखकर बोला अरे क्या बात है आप तो बड़े उदास दिखाई देते हैं।

रणधीर ने शीतला के पति को बिठाकर शीशे की अलमारी से शराब की बोतल निकाल कर गिलास में डालते हुए कहा—यह रही उदासी की दवा।

सुनील चौंक पड़ा। ऐसी क्या बात है? क्या मैं आपकी कुछ मदद कर सकता हूँ।

नहीं सुनील कोई किसी की मदद नहीं करता है। हाँ तुमसे एक बात अवश्य जानना चाहूँगा?

सुनील बोला—कहिए, मैं सब कुछ बतान को तैयार हूँ। क्या मुझसे कोई गलती हो गई है।

नहीं ऐसी कोई बात नहीं है, किन्तु मैं जानना चाहूँगा कि तुम्हारे सुखी जीवन का रहस्य क्या है? मेरे पास इस दुनिया की सारी यामते हैं मगर मन की शान्ति नहीं है।

शीतला का पति बोला—बस इतनी सी बात। मैं तो डर गया था। यह तो बड़ी मामूली-सी बात है। मेरा सीमित परिवार है। दो बच्चे और बीवी। बस। बचपन में मैंने, जितनी चादर उतने पाव फँलाने वाली

कहावत को सोचा समया और फिर अपने जीवन में उतार लिया। न कोई मानसिक उलझन, न तनाव, न उदासी, न जलन। बच्चे ठीक पढ़ लिख रहे हैं—सब सुचारु रूप से चल रहा है, समय का मैं सदा सदुपयोग करता हूँ, और अवकाश के क्षण में आमोद प्रमोद के लिय मित्रों के बीच बैठकर दो क्षण हस बोल लेता ॥

रणधीर की समझ में सब कुछ आ गया। मगर वह जीवन के उस कगार पर खड़ा था जहाँ से पीछे लौटना असम्भव था। आज उसे अनायास ही सच्ची शांति की कुँजी मिल गई। वह सोच रहा था कि अब वह आज से अपने अशांत जीवन की आधारशिला पर नया समाज की नींव रखेगा। राह में कीड़े मकड़ों जस नये भूखे बच्चों के लिय क्रियात्मक ट्रेनिंग का स्कूल खोलेगा। वह अपने व्यापार में एवं ऐसी शाखा खोलगा जो जन-जन तक सुनील का सदेश पहुँचा सके कि सीमित परिवार ही सफल तथा सुखी जीवन की कुँजी है। जहाँ कोमल गुलाब सुगन्धित होते हैं। गुलाब से बच्चे माँ बाप के मस्तिष्क तथा आर्थिक तनाव की अग्नि में नहीं झुनसते। उसकी निगाह वैसे ही प्राइम रूम की खूली खिड़की के बाहर अटक गई। जहाँ खुले बगीचे में खड़े पाघा पर अनगिनत उनके गुलाब मुस्कुरा रहे थे।

नायक

जब कभी अर्बुद मुझे मिलना मुस्कगता हुआ मिलता। उसका गेहुआ रंग ताम्रमिश्रित सान जसा सुगठित यूनानी मूर्ति सा सानुपाती शरीर—मुखमण्डल पर युवा अवस्था भी बिखरी आभा—मादकता में डूबी हिरन शायक-सी भोली चपलता त्रिये चमकीली आखें—गुलाबी पतले अधर कुछ ऐसे लगते थे जस किमी यथाथवादी चित्रकार का चित्र हो। उसकी नुकीली पतली मूछ तीखी नासिका तथा उन्नत ललाट उसका राजपूती वंशज का प्रमाण थी। मैं कभी उन हताश नहीं देखा किंतु आज जब मैं उससे मिला तो मुझे लगा कि उसके मकखन जैसे कोमल चेहरे पर कोई द्रव्य का परत उभर आइ हो, उसकी नैन दरारों में किसी विवशता की दो सूँदें छनछला रहा था। उसकी सलिल सरिता सी मुस्कान का प्रवाह कुछ अव-रुद्ध सा लगा। शायद किमी गहन जीवन समस्या की कलीली झाड़ियाँ उसका कामल हुन्य उसल गयी थी।

शिमला की माल राड पर उस समय घने बादलों ने कुहास में मुझे लग रहा था कि जम घबल चाद को काले बादलों के टुकड़े ने घेर लिया हो। उसका तजस्वी चेहरा काला पड़ता जा रहा था। मैं महसूस कुछ भयभीत-सा हो गया। मुझे लग रहा था कि किसी गहन बोधिल पीडा की तीखी कारों ने उसके व्यक्तित्व को भेद डाला हो। उसकी चिर परिचित आत्मी-यता ने मेरा मन भी घायल कर दिया। वह मेरे सम्मुख मूक देवदार के वक्ष के समान अडिग खड़ा था। मेरा साहस न हुआ कि मैं उससे कुछ पूछूँ—अर्बुद तुम्हें आज हुआ क्या है। और मैं अपने मन में दबी आशका में स्वयं को टटालने लगा।

मेरे मानस पटल पर उससे अतीत के चित्र एक एक कर साकार होने लगे ।

मुझे याद आया कि मैंने उस आठ वयस पूव पहलगाव म सबसे पहले देखा था । वहा वह भी अपन परिवार के साथ आया था । उम समय मुझे अपनी एक कहानी के लिए एक विशेष प्रकार के व्यक्तित्व वाले बालक पात्र की सलाश थी । तब मेरी पटकथा के आधार पर जुतिपी पण्डित अपन प्रसिद्ध नाटक की रचना किया करत थे । जिह मंच पर खेला जाता था । मेरी कथा पर आधारित सभी नाटक बड सफल रहत थे । इसका एकमात्र कारण था कि मेरे सभी पात्र और कथानक यमाय जीवन पर आधारित हात थे । मैं काफी खोजबीन के पश्चात चरित्रा का चुनाव अपनी कहानी के लिए करता था अरे ! न यहा मूल कहानी के स्थान पर आपस नाटक की बान कर बैठा ।

हा तो मैं कह रहा था कि अरविन्द पहल पहल मुझे पहलगाव म मिला था । तब मैं 'पय प्रदशक' नाटक के लिए कथानक और पात्र ढूँढ रहा था ।

काश्मीर के पहलगाव के उस गहाडी कस्ब म कश्यई रंग की फिरन पहने गुलाब से कोमल रंग किरये काश्मीरी बच्चा के बीच अरविन्द बडे लापरवाह भेदाज म खडा एक बडा सा सब या रहा था । उस दृष्टिकोण में मुझे तब अरविन्द इन्डो ग्रीक सुन्दरता की सजीव मूर्ति-सा लगा । दूर तक फनी ऊँची नीली सफेद बर्फ-सी ढकी पवत शृङ्खला पर उगी गहरी वनस्पति के बीच वह मुझे एक आलोकिक नायक-सा लगा । मेरी पत्नी दृष्टि म वह मेरी नई कहानी का एक ऐसा नायक था जो जुतिपी जी के नाटक का सच्चा आन्ध्र नायक बन सकता था । कुछ शोख चंचल सा तब उसके सिर पर लाल सफेद र्चक के कपडे की रीप लगी थी । जो प्रसिद्ध हिन्दी हीरो देवानन्द की शलो म कुछ आग की आर माथ पर झुकी हुई थी । उसके खडे होन तथा बालने का अन्धज बिलकुल निराला था । बस फिर क्या था मैंने अपन कंधे पर झूलत बँमरस उसका एक चित्र उतार लिया और फिर उसका माता पिता से मिलकर उसके लिए अपन नाटक में नायक के रूप म अभिनय करन की बात उनका मम्मुख रखी, किन्तु हुआ इसके

विपरीत। उन्होंने मेरे प्रस्ताव को छोटा जानकर ठुकरा दिया। अब आप स्वयं ही साच सकते हैं कि मेरी कहानी तब अधूरी ही रह गई मैं अपना प्रोत्सावकाश पहलगाव में बिताकर लौट आया।

इस घटना को पांच वर्ष बीत गए। और मैं शिमला में अपने व्यवसाय में व्यस्त हो गया। एक दिन अकस्मात् चिलचिलाती पहाड़ी धूप में शिमला के स्कूल पाइंट पर मेरा खोया नायक कुछ दूरी पर मेरे सम्मुख खड़ा था। मैं उसे पहचानने का प्रयास कर ही रहा था कि वह स्वयं मेरे पास आकर बाला—शायद आपने मुझे पहचाना नहीं? मैं अरविन्द हूँ। मैं अवाक था। लग रहा था कि मैंने पहचान भी नहीं उसे देखा है।

वह फिर तपाक से बोला अरे! आपको याद नहीं आ रहा। आपने ही तो सेव खाते हुए पहलगाव में अपने कमरे से मेरा चित्र लिया था। अब मैं सेंट एडवर्ड में यही पढ़ता हूँ। क्या अब आप मुझे अपने नाटक में काम दे सकते हैं। मुझे नाटक का नायक बनने का बड़ा शौक है। मैं सहसा ही बिना सोचे समझे कह बैठता हूँ। मैं जबकि तुम्हें काम दूँगा। और फिर उसके बाद वह निरंतर मुझसे मिलना रहा। एक दिन इसी बीच वह अपनी उच्च शिक्षा के लिए कहीं बाहर चला गया और मैं फिर अपने काम में व्यस्त हो गया।

कुल शाम षड्वर्षों बाद वह फिर मुझे घावावलो के बीच माल रोड पर मिला। अब उसमें अपनी आयु की आवश्यकताएँ स्पष्ट उभर आई थी। कोई तलाश, कोई अधूरापन उसकी जाखो में मलक रहा था। एक पल उस देखकर मुझे लगा कि मेरी कहानी पर आधारित मेरे नाटक का ड्राफ्ट सीन हो गया है। अब वह मेरे नाटक का नायक नहीं रहा।

मुझे लगा कि जम एक आन्ध्र नायक किसी यथाथ से टकराकर चूर चूर हो गया हो। विद्यार्थी काच का समाज में कोई उपयोग नहीं रहता, कोई मूल्य नहीं होता। मुझे उनकी सी ठेस लगी, मैं उससे कुछ बालू कि वह स्वयं ही कुछ और समीप आकर बाला—सर। आपसे कुछ राय लेनी है। मैं कितने दिनों से आपका शिमला में ढूँढ रहा था। अब तो आपने अपना घर भी बदल दिया है। उसके इस लम्बे अनचाहे वाक्य ने मुझे झकझोर दिया।

मैंने कहा—कहो अरविन्द क्या कहना है ? क्या फिर मेरे द्वारा लिखित नाटका में भाग लेना चाहते हैं ?

नहीं सर ! अब मैं यथार्थ जीवन के रंगमंच पर खड़ा हूँ । जहाँ सम्पूर्ण समाज चलनायक है । उसने कुछ राप भर शब्दां में तमतमात हुए कहा ।

उसके रोपपूर्ण वाक्यांश में उसका जीवन दर्शन का पुट में मुझे किसी अनात जाघात का आभास मिला । मैंने तुरन्त अपने का सयन करत हुए सतुलित स्वर में कहा—अरविन्द अब और पहलिया मत बुझाओ स्पष्ट कहो ! तुम कहना क्या चाहते हैं ?

वह बोला—सर ! मेरा जीवन दर्शन बड़ा कठोर सत्य है—वचन में मैं आर्मी या नवी अफसर बनने का स्वप्न देखता था । सोचता था कि देश की सेवा करूँगा । कि तु मेरी नाव स्वयं भवर में पड़ गई ।

मैंने फिर कहा—आखिर हुआ क्या है ? साफ साफ बताओ ना ।

अब वह चुप था । उसके मन की कोई गहरी व्यथा उसकी धसी हुई आवाज में दाँव बूद आनू छोड़ गई । वह कुछ दसासा सा हो अवलट गले से वाला—कुछ नहीं सर कुछ नहीं !

मैंने ठाडम बधात हुए उमम कहा—कुछ तो बताओ—मैं जो कुछ तुम्हारे लिए कर सकना हूँ करूँगा । यह वचन दता हूँ । तुम आखिर इतने हताश क्या हो गये ।

यह सुनकर उसकी निस्तब्ध जाखें फिर चमक उठी । उसका भाला भाला वचन मेरे सामने साकार हो उठा—काश्मीरी फिरन पहने बच्चों के बीच किन्तु अब अन्तर था समय का । पहाड़ी पठभूमि का स्थान पर अब चारा ओर यथाथ जीवन का लम्बा सथप उसका चारा ओर बिखरा पड़ा था ।

वह बोला—सर ! आप भी मुझे अब समझ नहीं पाएंगे क्योंकि आप सत्य एक आदर्श नायक का ही अपनी कहानी तथा नाटकों में स्थान देते रहें हैं । और बहुत तज गति से वह यह वाक्य कहना हुआ घने कुहासे में सुप्त होता हुआ कहीं दूर चला गया ।

मैं उसकी धुधली परछाईं को दूर तक जात हुए अवाक-भा खड़ा दग्गता रह गया ।

शान्ति

उस दिन वह एक खूबसूरत में मिला तो कुछ खोला-खोला-सा था।
अक्सर मैं उससे अजीबोगरीब प्रश्न कर बैठा हूँ। उस दिन भी मैं उस
से कहा "शानी क्या नहीं कर लेत मलीम। जात्रिर तू तरह दिन्दगी
खानाबगोशों की तरह बब तब गुजारो?" कहने का ता मैं मलीम से कह
गया—मगर मन ही मन ऐसा महसूस हुआ कि जैसे एक महान विप्लव
की कमजारी को मैं मरेआम नगा कर दिया हूँ। नहीं नहीं उसकी कम-
जोरी का कहा बल्कि उसके अछण्ड व्यक्तित्व का एक बड़ा शक्ति को मरे-
आम अछाड़े में उतार दिया हो, जहाँ उसके जाड़ का कोई अर्थ पहलवान
न हो। और वह स्वयं एक अजनबी पहलवान की भाँति जीवन में मैदान
में खड़ा था।

यूँ मरे मन में अनको तर्क एक क्षण में ही। ग्रामीण मेले में गये हिंडाले
की तरह झूल गये। मुझे लगा जैसे उस मन की अमन्य भीड़ मुझे ही घूर
रही हो। अपने का जरा मयत कर मैं मलीम की मुखाकृति को फिर बड़े
गौर से देखा—उसमें हुए बड़े-बड़े काले बाल, निखरा हुआ कुन्दन-सा गौर-
वर्ण चेहरे पर सुनहरे फेंम का चश्मा जिसके अंदर बड़ी-बड़ी दो आँखों
की असीम गहराई में कल्पना के अनन्त रूप लहरा रहे थे। मुझे उस दिन
उसका व्यक्तित्व राज में अधिक आकर्षण लग रहा था। हमेशा की तरह
आज भी मेरे शादी के प्रश्न पर उसने विरक्त भाव से कह डाला— "इतनी
फुसल ही कहा है जो जिन्दगी के इस पहलू पर सोचूँ। तुम तो जानते हो
रंग और ब्रुश के अलावा मौका ही नहीं मिलता माना अगर शादी
खू तो" तो कहकर वह कुछ खो सा गया। ठण्ठी चाप था।

कर आखो स चश्मा उतारत हुए वह कुछ अजीब सूने चहरे पर बदलत रंगों में बोला ता नया मेरी यह कला, यह फन जिंदा रह सकेगा—खानगी मसला को गुलझाने में मैं उलझ जाऊंगा—तुम्हें तो मालूम ही है कि मैं इस पेशे को अपने मजहब के खिलाफ एक जिहाद के रूप में अपनाया है। घरवालों व अजीज रिश्तदारों की मर्जी के बिना मैं जिंदगी की इस राह पर अकेला ही चल पड़ा। बीस साल गुजर गये घरवाला व मैं मैं मर चुका हूँ। मगर जमाने के लिए मैं अभी जिंदा हूँ और जिंदा रहना चाहता हूँ जानते हो क्या ?”

मैं क्या का उत्तर भी न साच पाया था कि वह फिर सिलसिलवार शब्दों को जोड़ते हुए बोला— क्योंकि मैं दुनिया का इंसानियत का मजहब देना चाहता हूँ। रंग और त्रुश से सिर्फ रोशन, अथा हल्की की अक्कासी करना मेरी जिंदगी का काम मकसद नहीं।”

‘ वस उसे ही तुम मेरी जिंदगी या शादी जो चाहो समझ लो—यह मेरी जिंदगी का अपना फनसफा है। अबसर जो इसे समझना चाहता है वह और उलझ जाता है। ’

उस दिन रस्तरों में सलीम के वाक्यों उनके फलसफे को समझने में मैं न जान कब तक उलझा रहा। रेशम के खुशनुमा धागा की गुच्छी-सी वह उलझन मेरी उलझाई की तरंगों द्वारा मेरी अंतरात्मा में स्निग्धता के आवास का अम्बार लगाती रही ।

पिछले दिसम्बर की छट्टियों में वह अत्माडा से दिल्ली किसी नौकरी के इंटरव्यू के लिए बुलाया गया था। न जान क्यों उसने मुझे नाहन से विचार प्रेम के लिए बुला लिया। जब मैं उसके पास पहुंचा तो वह अपने स्टूडियो में एक तैल चित्र बनाने में सलग्न था। वह स्टूडियो कोई खास पायदात उपकरणों से सुसज्जित या लस नहीं था। घर के दो एक छोट से कमरे का उमन बला कम बना रखा था। चारों ओर की दीवारें सोलन से एक लुगघ पैदा कर रही थीं। एक ओर लकड़ी के तख्त पर उमका विस्तर लगा था। जिसे पर ईरानी किंतु बहुत पुराना पुश्तनी कालीन बिछा था। —तबिय पर बड़े पाजामे किसी फोटोग्राफर द्वारा लिया गया चित्र पड़े था। —नीचे फर्श पर पायदान और धनका रखा चित्र विपर पड़े थे, लगता था

नायाब पेंटिंग है—जरा मैं भी ता उस देखू जिसके कारण तुमने इन सुन्दरियों को भी ठुकरा दिया है।

‘आओ इधर आओ मेर करीब स इजल पर लगी हुई तस्वीर का देखो, इसे मैं चौदह नवम्बर तक पूरा कर देना चाहता हूँ—’ स्व० नहरू की याद-गार में बाल दिवस’ पर इस पेंटिंग को विशेष रूप से मैं अपनी भाट का प्रदर्शनी में रखना चाहता हूँ। देहरादून में जोगिन्दर ने सारा इन्तजाम कर लिया है—वस मेरे लिए यह पेंटिंग ले जाना बाकी है।’

‘कहिये कैसे लगी?’

ओह इसमें तो तुमने बर्मास ही कर लिया। मैं अपने उमड़ते हुए उदगारा को और अधिक रोक न सका। रंग रूप के अद्वितीय चयन में उसकी ज़िदगी का फलसफा साकार था। चित्र मूव होत हुए भी यूनान के पत्थरों की भांति बोल रहा था। मरी अनुभूतियाँ सिमटकर इस प्रकार जुवान पर आ गई कि शब्द जड़ हो गये सलीम ही मुझे उस चित्र पर अनका रूप में दिखायी दे रहा था।

भारतीय वेशभूषा में एक इंसान दाहिना हाथ उठाये कुछ कह सा रहा था। पास में एक नारी एक बच्चे की लाश लिए खामोश मुद्रा में खड़ी थी। निराशा और दुःख उसके रोम-रोम से फूट पड़ रहा था। नीचे की ओर कुछ फौजी जवानों की लाशें क्षत-विक्षत पड़ी थीं। खून जैसा सुख रंग पात्रों के घायल शरीर से बह रहा था।

मैं अधिक देर तक उस न देख सका। सम्भवतः मेरा मन किसी अज्ञात भय से उद्बलित हो उठा। यह चित्र सांकेतिक रूप में मानव समाज की कोई सन्देश दे रहा था।

चित्र के रक्तिम वातावरण ने मेरे शरीर के तंतुओं को गम कर दिया। एक अजीब-सी क्षणभ्रान्नाहट मरी नसों में दौड़ गई। अपने मन की बड़ी कठिनता से उस मानसिक स्थिति से निकालकर मैंने चित्र के सार को स्वयं बलाकार सलीम से पूछा। तो उसने बड़े दुर्ग स्वर में कहा—

‘हम शान्ति चाहते हैं यह इसका शीघ्र है।’

चौदह नवम्बर की रात ही चौगान में एक नई गूँज सी भरने लगी। वीण की धुन सुनकर ऐसा आभास होता था कि जैसे उसमें से ध्वनि आ रही

हो कि 'हम शान्ति चाहते हैं।'

मनुष्य की कितनी सीधी-सच्ची सरल चाह है। क्या सलीम बुद्ध है ? अशोक है ? गांधी है ? या बटोर्ड रसल है ?

मगर नहीं यह सब वह कहा हूँ ? न वह वैरागी है न चक्रवर्ती राजा और न ही कोई राजनैतिक शांतिप्रिय शांति ज्योति जगाने वाला नेता ।

वह तो एक निधन, सदैव भौतिक समस्याओं से जूझने वाला एक असाधारण चित्रकार है। उसकी भौतिक कूठाएँ और सीमाएँ उसका प्रखर व्यक्तित्व के प्रवाह को न रोक पाई ।

बहुत दिनों से माचता हूँ कि उसे एक पत्र लिखू उसका हाल जानू कि उसकी प्रशंसा और नोकरों का क्या रहा ।

मैं सलीम के विषय में मोच रटा था कि डाकिया एक टेलीग्राम मेरे हाथ में दे गया, जिसमें लिखा था—

आर्टिस्ट डैड'

पढ़कर मुझे लगा कि जस चीन न आज फिर अणु बम का विस्फोट किया हो ।

भौतिक समस्याओं से सदा लटा चले कलाकार को शांति मिल गई । मगर क्या मुझ कभी शान्ति मिलगी ? क्या नेहरू के मजहब की तरह सलीम के मजहब को काई जान पायेगा ।

चौदह नवम्बर सदा आयेगा और जोशों खराश से जशन के रूप में मनाया जाता रहेगा । कीन बाल त्विम के लिए तसवीरें बनायगा । जिससे विनाश का बदन पाव रख सकें । लगता है शांति सदा के लिए सौ गई हो ।

भौतिक शान्ति और मान के अहम ने स्वयं को बियतनाम जसी निदयता की जजीरो में जकड़ लिया है ।

मेरे सामने प्रायः सलीम जस अनेको चेहरे उभर उभर आते हैं और जशन जशन अनानियत मरन लगती है, शांति चिरनिद्रा में सोन लगती है ।

निरूपमा

‘अरे दूर हट भिखारिन कही बी’ प्रसाद क्या तेरे लिय खरीदा है’ एक मोटी ठूँचा वाला का जूड़ा बाधे सम्य दिखन वाली महिला कह रही थी ।

उसी समय आगे बढ़कर उस भिखारिन के फँस सीधे हाथ पर मैंने एक साल बर्फी का टुकड़ा रख दिया । भिखारिन न उस सेते हुए अपन दूसरे हाथ से आखा मे आए छलकते आम् पोछ डाले । दब स्वर मे आशीर्वाद के कुछ शब्द ज्योकी जुबान पर अनायास ही आ गय । मैं काली बाड़ी मन्दिर की सीढिया उतरने लगी । मेरे साथ मेरी छोटी पुत्री रीना प्रश्नवाचक निगाहा से मुझ देखत हुए कहन लगी— मम्मी यह भीख मागन वाली ओरत रो क्या रही थी ? मैं निरंतर आगे बढ़ रही थी । मुझे शिथिलता के माल रोड पर कुछ सामान खरीदना था । दूकान पर सामान खरीदत हुए भी रीता के बाल सुलभ मन पर वही प्रश्न उभर आया और वह फिर पूछने लगी कि वह भिखारिन रो क्या रही थी ? क्या उसे किसी ने मारा है ? मैंने इस प्रश्न मे अपना पीछा छुडान के लिए झत्सात हुए कह दिया—‘ हा उस किसी ने मारा है । ’ कि तु वह शांत न हुई फिर दूसरा प्रश्न पूछ बैठी । यह पढ़ती क्यों नहीं ? इसी तरह बेतुके प्रश्ना का उत्तर देती मैं उसी राह मे घर वापस लौटी । तब तक काली बाड़ी मन्दिर पर दशनाथ आए भक्ता बी भीड़ छट चुकी थी । किन्तु ठिठुरती मुनसान रात्रि मे वह भिखारिन ज्योकी त्या छोटी थी । मर द्वारा दिया हुआ साल बर्फी का टुकड़ा उसकी हथेली पर पड़ा था । मैं एक पल यहाँ टहर गई । बिजली के चम्भे से आती रोशनी मे मैंने उसक घट्टर को गौर से देखा तो लगा कि अस अतीत का कोई दद उसने मुझ मच्छल पर तर रहा हो । वह किसी दिया खण्ड न मे छार्द मूक मूर्ति

लग रही थी।

मेरे मुख से अनायास ही निकल गया—अरे तू अभी यही खड़ी है।
अपने को सम्बोधित होत देख वह भिखारिन चौंक पड़ी, जैसे उसकी कोई
मधुर स्वप्न टूटकर बिखर गया हो। मैं फिर झोल झुठी अरे तू कीड़े
काम क्या नहीं करती, भीख से पेट भरना कोई अच्छी बात है?

माई तू ठीक ही कहती है। किंतु मुझ जसी भिखारिन को काम कौन
देगा? मेरा कोई भी नहीं है।

उसका कोई भी नहीं है यह जानकर मेरा मन द्रवित हो उठा। मुझे
लगा जैसे इस विशाल जीवन रूपी सागर में वह स्त्री एक अकली तिनका
मात्र हो। जिस तूफानी सहरो पर तिरना ही है। मैंने फिर अपने प्रश्न को
दोहराया। उसका वही उत्तर था—हा माई मेरा कोई भी नहीं है। उसके
इस वाक्य ने मेरा मन पकझोर दिया। मुझे याद आया जब किसी कला
प्रदर्शनी में 'राह के भिखारी' नामक कला कृति सैकड़ों रुपये मूल्य की होते
हुए भी बिक गई थी। किसी कला प्रेमी ने उस खरीद लिया था किंतु आज
इस जीवित भिखारिन का कोई मूल्य नहीं, इसका जीवन अथहीन है। मैं
उससे अगले दिन उसी स्थान पर मिलने का कहकर घर लौट आई।

दूसरे दिन मैं फिर काली बाड़ी मंदिर के द्वार पर पहुँची। देखा तो
भिखारिन खड़ी थी। मुझे देखकर उसका मुख किसी आशा से टिमटिमा
उठा। मैं उससे उसका नाम पूछ लिया। वह बोली राह की भिखारिन।
मैं प्रतिरोध में कहा—रस नाम के अतिरिक्त बचपन का नाम क्या है?

बचपन का शब्द सुनते ही उसका मन पीड़ा से भर गया बोली आप
यह सब जानकर क्या करेंगी?

मैंने कहा—कुछ करना ही है तभी तो पूछ रही हूँ। वह रुधे हुए गले
से बोली—'निरुपमा'। मेरे माता पिता यही कहा करते थे। किंतु वह
बचपन की निरुपमा तो बच की भर चुकी है अब तो मैं अपना नाम भी भूल
चुकी हूँ।

मुझे उसका नाम सुनकर लगा कि कभी वह किसी अच्छे परिवार से
रही होगी। मैंने उससे अपना बीता जीवन बताने का आग्रह किया।

वह बोली—माई तू किस किस की आत्मकथा पूछेगी? मुझ जसी

सहस्रों नारियाँ इस देश में हागी, जो अपनी लाश स्वयं अपने कंधा पर उठाए रेंग रही हैं।

यह वाक्य सुनकर मुझे लगा जैसे उसके जीण स्वर में कहीं कोई दार्शनिक मर्म भेदी तत्त्व छुपा हो, जिस कोई उपन्यासकार अपनी कथा का विवरण सुनाने से पूर्व अपने श्रोताओं के मानसिक स्तर की टाह ले रहा हो। मेरी जिज्ञासा और भी प्रबल हो उठी—‘मैंने अपने जाग्रह को दोहराया और उसके समक्ष प्रण किया मैं उस जसी निरूपमाया को दलदल से निकालने का पूरा प्रयास करूंगी।’ मैं स्वयं एक नारी हूँ। तुम्हारा दुःख समझ सकती हूँ।

इस बात पर वह अपने मन का बग रोक न सकी और अपने अतीत को कुरेदते हुए बोली—बचपन में मेरा नाम निम्पमा था। युवावस्था में लाग मुझ नीरव कहने लगे। एक दिन मैं पूर्णिमा की चान्नी में आगरा का ताजमहल देखने गई। वहाँ मुझे एक शाहजहाँ मिल गया, जिसने मुझ मुमताज की सनादन की चाह व्यक्त की। तब मैं जीवन के यथायथ में अतृप्त थी। मैं समय के बहाव में बहने लगी। मुझ समाज की आलोचनाओं का गरस पीना पड़ा। मेरा उस युवक में विवाह हो गया। विवाह के पश्चात् पहाड़ों की सर करन शिमला आ गई। इस मन्दिर में बड़ी कामनाएँ सजाएँ मैंने लाल वर्षा का प्रसाद चढ़ाया था न जान क्या क्या मांगा था? मैंने भी तब एक भित्तिरिक्त में कहा था—अरे दूर हट प्रसाद क्या तर लिए खरीदा है?

मैं निस्तब्ध उसकी आत्मकथा सुन रही थी। उसकी स्मृति धारा के वेग को बिना ताडे हुए मैंने बस इतना ही कहा—फिर क्या हुआ?

फिर क्या हुआ—माइ दूसरी मुबह मरा वह बबुआ शाहजहाँ जिस होटल में मैं ठहरी थी मुझे सोता छाड़कर कहा दूर चला गया। जोर मरी झाली में दरार की ठोकरें डाल गया। अपनी आत्मा का बचान में शरीर बिकता रहा। और अब अम्बिपजर लिये निर्जीव-न्ती मैं आपके सामने पड़ी हूँ। वापस घर लौट जाना सम्भव नहीं था क्योंकि हमारी माँ की दाना के घर जाना की सटमन के बिना हुई थी। मर्तों की दुनिया में नारी शायद एक नजर की गठरी है।

दुःख इस बात का है कि मैं जिस घर भी नौकरी की खोज में गई वहाँ मुझे औरतों से ही गालियाँ खानी पड़ी। अत्याचार व क्रूर व्यवहार के अलावा मुझे कुछ नहीं मिला। समाज सेवी संस्थाओं में भी दुर्व्यवहार का व्यापार देखा। मंदिरों में पाप व घण्ट बजाते हुए भी थक-सी गई हूँ। कोई भी जीवन की राह साफ सुथरी नहीं आती।

कल वर्षों बाद इस साल वर्षों के टुकड़े में अपना प्रतिबिम्ब स्वच्छ दिखाई पड़ा और तब से इसे निहार रही हूँ। सोच रही हूँ कि सम्भवतः अपने का जीवित रखने का कोई अवसर मिले। आपके वाक्य कानों में गूँज रहे थे। आँखों को आपका ही इन्तज़ार था।

क्या आप मुझे कोई नौकरी दे सकेंगे ?

मैं सहसा चौंक गई। मैंने उसे निराश न करने के उद्देश्य से कहा—यूँ तो मैं अपना काम स्वयं ही कर लेती हूँ। छोटी-सी गृहस्थी है किन्तु फिर भी मैं तुम्हें अपने घर रख लूँगी। अब निराशा की कोई बात नहीं है बहन ! तुम मेरी कहानी का एक जीता जागता चरित्र हो।

